मंत्र·तंत्र·यंत्र
विज्ञान

सिद्धि दिवस ३१.८.८६

श्री भुवनेश्वरी खड्ग माला सिद्धि

शास्त्रों में पूर्ण धन और ऐश्वर्य की देवी को भुवनेश्वरी माना है, यही एक महाविद्या है जो आकस्मिक धन प्रदान करने में समर्थ है, शाक्त प्रमोद के अनुसार जो साधक जीवन में एक बार भुवनेश्वरी सिद्ध कर लेता है, उसके जीवन में किसी प्रकार की कोई न्यूनता रहती ही नहीं।

इस सिद्धि दिवस के अवसर पर निम्न प्रयोग सम्पन्न करने पर स्वयं भुवनेश्वरी प्रत्यक्ष दर्शन देती है, और साधक की समस्त मनोकामनाएं पूर्ण करती है।

भुवनेश्वरी साधना रहस्य

इस पूरी साधना में "भुवनेश्वरी खड्ग माला" का विशेष महत्व है, इस माला को ही इस साधना में सिद्ध किया जाता है, और माला धारण करने पर हर क्षण भुवनेश्वरी साधक के साथ रहती हुई उसकी प्रत्येक मनोकामना पूर्ण करती है।

इसको सिद्ध करने पर अन्य समस्त प्रकार की सिद्धियां स्वतः प्राप्त हो जाती है, इसलिए प्रयत्न करके भी साधक को सिद्धि दिवस के अवसर पर यह गोपनीय और दुर्लभ प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए।

सबसे पहले साधक सिद्धि दिवस की रात्रि को स्नान कर सफेद वस्त्र धारण कर सफेद आसन पर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय, और सामने पात्र में "भुवनेश्वरी शक्ति खड्ग माला" रख दे, यह माला जीवन की दुर्लभ और महत्वपूर्ण माला कही जाती है, जिसे १०८ महादेवियों के मन्त्र से सिद्ध की जाती है, इसका प्रत्येक मनका अपने आप में महत्वपूर्ण होता है।

माला को स्थापन करने के बाद "ॐ भुवनेश्वर्यै नमः" का १०८ बार उच्चारण कर प्रत्येक मनके पर केसर का तिलक करे, और फिर उस पर पुष्प समर्पित करे, और फिर निम्न प्रकार से विनियोग करें।

विनियोग

ॐ अस्य श्रीभुवनेश्वरी-खड्ग - माला-मन्त्रस्य श्रीप्रकाशात्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीभुवनेश्वरी देवता, हं बीजं, ईं शक्तिः, रं कीलकं, श्रीभुवनेश्वरी-पराम्बा-प्रसन्नार्थे जपे विनियोगः।

इसके बाद साधक बताये हुए अंगों को दाहिने हाथ से स्पर्श करते हुए, ऋष्यादि न्यास करें।

ऋष्यादि न्यास

श्री प्रकाशात्मा-ऋषये नमः शिरसि, गायत्री-छन्दसे नमः मुखे, श्रीभुवनेश्वरी-देवतायै नमः हृदि, हं बीजाय नमः गुह्ये, ईं शक्तये नमः पादयोः, रं कीलकाय नमः नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी-पराम्बा प्रसन्नार्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

और फिर पूर्ण मनोयोग पूर्वक अपने हाथों में पुष्प ले कर इस माला को पुष्प समर्पित करते हुए निम्न ध्यान संपन्न करें।

वर्ष-९

अंक-७

जुलाई-१९८९

आनो भद्राः क्रतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु
गुरुर्देवो महेश्वर ।
गुरु साक्षात् पर ब्रह्म
तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥

गुरु ही ब्रह्मा, विष्णु एवं साक्षात् शिव स्वरूप हैं, वे ही पर ब्रह्म हैं, मैं उन्हें भक्तिभाव से प्रणाम करता हूं ।

मुद्रक प्रकाशक लेखक

एवं

सम्पादक

योगेन्द्र निर्मोही

सम्पर्क —

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग

हाईकोर्ट कॉलोनी,

जोधपुर-३४२००१ (राज०)

टेलीफोन : २२२०९

हनुमान सिद्धि

२१-८-८९ भाद्रपद कृष्ण ५, सोमवार को हनुमान सिद्धि जयन्ती है। इस दिन किसी भी धर्म का मानने वाला और किसी भी प्रकार की साधना सम्पन्न करने वाला व्यक्ति हनुमान साधना अवश्य करता है।

हनुमान अपने आपमें पूर्ण समर्थ, सक्षम और सर्व व्यापक देव है। श्री तुलसीदासजी स्वयं हनुमान के ऋणी है,--श्रीराम दर्शन और रोग मुक्ति दोनों के लिए।

मेरे मन में भी काफी समय से हनुमानजी के बारे में जिज्ञासा थी, और मेरा चिन्तन यह था, कि हनुमान चरित्र में कोई ऐसा रहस्य जरूर है, जिससे कि साधकों को तुरन्त सफलता प्राप्त हो जाती है। मैंने जीवन में यह अनुभव किया है, कि किसी भी प्रकार की रोग मुक्ति के लिए हनुमान साधना अपने आपमें पूर्ण और श्रेष्ठ साधना है। मानसिक और शारीरिक दोनों ही प्रकार के रोगों को समाप्त करने के लिए जीवन में बुद्धि, बल, साहस एवं निर्भयता प्राप्त करने के लिए हनुमान साधना से ऊंची कोई साधना नहीं है।

आज का युग चंचल प्रवृत्ति का युग है, हम मन, वाणी और कर्म से चंचल और अधीर हो गये है, हम में जो सहनशीलता होनी चाहिए, उसका अभाव है। हम में जो पौरुषता और कर्मठता होनी चाहिए, वह जीवन में कही पर भी दिखाई नहीं देती, इसीलिए जीवन में संयम प्राप्त करने के लिए और बालकों में सभी दृष्टियों से पूर्णता प्रदान करने के लिए हनुमान साधना सर्वश्रेष्ठ और अद्वितीय है।

भगवान श्री राम स्वयं श्री हनुमान के अनुयायी है, जो अणिमा आदि समस्त सिद्धियों को जानने वाले है, जो योग के क्षेत्र में अपने आप में पूर्ण है, जो सेवा की दृष्टि से पूरे संसार के लिए उदाहरण है, और जो पूर्ण धन, यश, और वैभव प्रदान करने में समर्थ है—

अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता।
अस वर दीन्ह जानकी माता।।

वास्तव में ही हनुमान चंचल चित्त को स्थिर बनाने में सहयोगी है, योग के द्वारा जो शक्ति और साहस प्राप्त होता है: वह हनुमान के द्वारा ही संभव है।

मेरा अनुभव

मैंने अपने जीवन में यह अनुभव किया है कि आर्थिक उन्नति के लिए और नव निधि अष्ट सिद्धि प्राप्त करने के लिए श्री हनुमान से ज्यादा और कोई समर्थ साधना नहीं है। चाहें कितना ही ऋण हो यदि आगे दिया हुआ प्रयोग एक बार भी सम्पन्न कर लिया जाता है तो निश्चय ही व्यक्ति ऋण से मुक्त हो जाता है और उसके घर में चारों ओर से धन आने की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है, कई बार तो मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि यह प्रयोग सम्पन्न होते होते कार्य सिद्धि होने लग जाती है।

जीवन में बाधाएं तो आती ही रहती है, परन्तु पूरे संसार में जितनी प्रकार की साधनाएं है, उन समस्त साधनाओं में इस कार्य के लिए हनुमान साधना सर्वाधिक श्रेष्ठ और प्रमुख है। मेरे अपने जीवन में जब जब भी बाधाएं आई, मैंने इसी प्रयोग को सम्पन्न किया और सम्पन्न होते होते ही वातावरण कुछ इस प्रकार से परिवर्तित हो जाता है, कि जो व्यक्ति प्रतिकूल होते है, जो अधिकारी बात ही सुनना पसन्द नहीं करते, वे ही व्यक्ति और अधिकारी अनुकूलता प्रदर्शित करने लग जाते है, और आगे बढ़ कर कार्य कर देते है।

रोग मुक्ति के लिए तो यह प्रयोग अपने आप में अद्वि-

तीय है, मेरा तो अनुभव अब यह बना है, कि चाहे कितना ही भीषण रोग हो, चाहे भौतिक या दैविक बाधाएं हों, इस प्रयोग को सम्पन्न करने से उनका समाधान तुरन्त हो जाता है, और साधक रोग मुक्त हो जाता है।

साधना प्रयोग

यह प्रयोग मुझे एक उच्च कोटि के योगी से प्राप्त हुआ था, इस प्रयोग को हनुमान जयन्ती के अवसर पर सम्पन्न किया जा सकता है, या किसी भी मंगलवार को यह प्रयोग सम्पन्न किया जाना चाहिए।

यह प्रयोग दिखने में अत्यन्त सरल है, परन्तु इसका प्रभाव अपने आपमें अचूक और महत्त्वपूर्ण है। साधक को चाहिए कि मंगलवार की रात्रि को या हनुमान जयन्ती के अवसर पर इस प्रयोग को निष्ठापूर्वक सम्पन्न करें। मेरे सम्पर्क में ऐसे कई साधक आये है जो प्रत्येक मंगलवार की रात्रि को यह प्रयोग सम्पन्न करते है, और मैंने अनुभव किया है, कि उनके जीवन में कभी किसी प्रकार की बाधा व्याप्त नहीं होती, भूत प्रेत पिशाच आदि का भय नहीं रहता, ग्रह बाधा या पितृ बाधा अपने आपमें ही समाप्त हो जाती है और बहुत तेजी से उसका ऋण समाप्त होने लगता है, और निरन्तर आर्थिक उन्नति होने लगती है।

जिस दिन यह प्रयोग सम्पन्न करना हो, साधक स्वयं लाल धोती पहिन कर लाल आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जांय और सामने "बाधा निवारक महावीर यंत्र" किसी तांबे के पात्र में स्थापित कर दे, यह यंत्र जीवन का एक दुर्लभ और महत्वपूर्ण यंत्र होता है जिसे घर में रखना ही सौभाग्य माना जाता है।

तांबे के पात्र में कुंकुम से "श्री हनुमतयै नमः" लिख दें, और उसके ऊपर इस यंत्र को स्थापित कर दें। पहले इस यंत्र को कच्चे दूध से धोवे और फिर शुद्ध जल से धो कर लाल वस्त्र से पोंछ दें, फिर उस पात्र में रखे हुए जल को किसी अलग कटोरी में ले कर पात्र को पोंछ कर स्वच्छ कर दें और पुनः पात्र में "ॐ हनुमतयै नमः" कुंकुम से लिख कर उस पर यंत्र को स्थापित कर दे, और यंत्र पर पांच कुंकुम की बिन्दियां लगावे। इस यंत्र पर लाल रंग के पुष्प चढ़ाये।

इसके बाद यंत्र के सामने पांच तेल के दीपक लगावे, इसमें किसी प्रकार के तेल का प्रयोग किया जा सकता है, और सामने एक पानी की गिलास भर कर रख दें, और मूंगे की माला से निम्न "संकट मोचन अष्टक" का इक्यावन बार पाठ इसी रात्रि को सम्पन्न करे।

पाठ प्रारम्भ करने से पूर्व जो समस्या हो, जिस प्रकार की बाधा हो, वह हाथ जोड़कर निवेदन कर दें, और हनुमान का निम्न प्रकार से ध्यान करें—

ध्यान

मनोजवं मारुत-तुल्य वेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानर-यूथ-मुख्यं, श्रीराम-दूतं शरणं प्रपद्ये ॥

ध्यान सम्पन्न करने के बाद एक बार पुनः हनुमानजी के सामने अपनी समस्या का निवेदन करें, और फिर निम्न प्रकार का अष्टक उच्चारण करे।

कार्य सिद्धि के लिए एक ही रात्रि में इक्यावन बार "संकट मोचक हनुमानाष्टक" का पाठ होना जरूरी है, पाठ सम्पन्न होने पर जो सामने गिलास में जल रखा हुआ है, वह जल घर में छिड़क दें, या घर में किसी को रोग हो तो वह जल उस रोगी को पिला दें।

यह निश्चित समझे कि दूसरे दिन सुबह से ही अनुकूलता प्रारम्भ हो जाती है किसी भी प्रकार का संकट निश्चय ही समाप्त हो जाता है।

हनुमान जयन्ती अर्थात् २१-८-८९ की रात्रि को यह प्रयोग सम्पन्न करने पर पूर्ण हनुमान सिद्धि प्राप्त हो जाती है, और उसके जीवन में सभी प्रकार से पूर्णता एवं श्रेष्ठता अनुभव होती है।

वास्तव में ही यह मेरे जीवन का अनुभव है, और यह मेरे जीवन का रहस्य है, कि जीवन की सभी बाधाएं सभी प्रकार के ऋण, सभी प्रकार की समस्याएं, इस प्रयोग से हल होती ही है।

(हनुमानाष्टक पृष्ठ ४० पर)

सहस्राक्षरी

सिद्ध चण्डी महाविद्या प्रयोग

सिद्धाश्रम पंचाग के अन्तर्गत भाद्रपद कृष्ण अष्टमी तदनुसार २४-८-८९ को श्री काली जयन्ती है। साधक इस दिन का मनोयोगपूर्वक इन्तजार करते है।

इस बार पत्रिका में अत्यन्त दुर्लभ गोपनीय और महत्वपूर्ण डामर तंत्र में उल्लिखित सहस्राक्षरी सिद्ध चण्डी महाविद्या प्रयोग प्रस्तुत कर रहा हूं।

वास्तव में ही जो सही अर्थों में साधक है, जो अपने जीवन में साधना क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहते है, उनके लिए यह आवश्यक है कि वे कुछ ऐसी श्रेष्ठ साधनाएं सम्पन्न करे जो कि हजारों हजारों वर्षों से प्रचलित रही हो, जिसे कई कई वर्षो से आजमाया हो, और जो हर बार प्रामाणिकता की कसौटी पर खरी उतरी हो।

यह प्रयोग भी अत्यन्त प्राचीन और महत्वपूर्ण है, तंत्र ग्रन्थों के अनुसार यह भगवान शिव द्वारा प्रतिपादित सिद्ध प्रयोग है, जिसे समुद्र मंथन के अवसर पर हलाहल को पचाने के लिए स्वयं भगवान शिव के मुंह से उच्चरित हुआ था।

तांत्रिक ग्रन्थों के अनुसार पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने के लिए स्वयं दुर्वासा ने इस प्रयोग को सिद्ध कर उस समय के ऋषि होने की संज्ञा प्राप्त की थी। जब दशरथ का कैकय नरेश से युद्ध हुआ, तो उनके कुलगुरू वशिष्ठ ने इस प्रयोग को सम्पन्न कर उन्हें विजय दिलाई, बाल्मीकी के आश्रम में, महर्षि वाल्मीकी ने जब लव कुश को तंत्र साधना सिखाने का उपक्रम किया, तो सबसे पहले इसी साधना को सिखाया था जिससे कि वे हनुमान से भी युद्ध कर सके, और सफलता अर्जित कर सके। वायु पुत्र महावीर तो इस साधना के सिद्धहस्त आचार्य थे, और उनके द्वारा कई ऋषियों ने इस साधना को सम्पन्न किया था।

द्वापर युग में भी जब महा भारत युद्ध प्रारम्भ होने की स्थिति में था, इधर मात्र पांच पाण्डव ही थे, और उधर कौरवों की विशाल सेना थी, ऐसे समय में पूर्ण विजय प्राप्ति के लिए भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को गुफा में ले जाकर इस साधना को सम्पन्न करवाया और उसके बाद ही महाभारत युद्ध प्रारम्भ किया, अर्जुन स्वयं आगे चल कर कहते हैं, कि मैंने और मेरे भाइयों ने विजय प्राप्त की, पर युद्ध में मैं देख रहा था, कि महाकाली स्वयं आगे बढ़ कर शत्रुओं का संहार कर रही है और हमें विजय पथ की ओर अग्रसर कर रही है।

वर्तमान में भी इस साधना रहस्य की प्रशंसा शंकराचार्य ने तो की ही है, उन्होंने स्वयं एक स्थान पर उल्लेख

किया है, कि मेरे पास जितने भी तांत्रिक रहस्य है, उनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण "सहस्राक्षरी सिद्ध चण्डी महाविद्या" प्रयोग है , जिसके माध्यम से जीवन में असंभव कार्यों को भी संभव किया जा सकता है । गुरू गोरखनाथ तो इस साधना के बाद ही 'गुरू' शब्द से विभूषित हुए और विश्व में प्रसिद्धि प्राप्त की। वर्तमान में भी स्वामी अरविन्द, कपाली बाबा, स्वामी विशुद्धानन्दजी आदि योगियों ने इस साधना को सम्पन्न कर जीवन में पूर्णता प्राप्त की ।

साधना रहस्य

यह साधना सरल है, परन्तु साथ ही साथ महत्वपूर्ण और अचूक भी । काली जयन्ती के अवसर पर रात्रि को यह साधना सम्पन्न की जा सकती है ।

साधक सबसे पहले रात को ९ बजे के बाद सर्वथा नग्न हो कर स्नान करे, और फिर बिना किसी अन्य वस्त्र को स्पर्श किये पहले से ही धो कर सुखाये हुए सफेद वस्त्र (धोती) को धारण करें, और फिर सफेद आसन पर दक्षिण की ओर मुंह कर बैठ जाय ।

सामने चमत्कारिक 'सहस्राक्षरी सिद्ध चण्डी महायंत्र' को स्थापित कर दे, और उसकी संक्षिप्त पूजा करे, इसके बाद हाथ में जल लेकर अपनी मनोकामना स्पष्ट करता हुआ विनियोग करें ।

विनियोग

अस्य श्रीसर्व–महा-विद्या-महा-राज्ञी-सप्तशती-मन्त्र-रहस्याति-रहस्य–मयी-,परा-शक्ति-श्रीमदाद्या-भगवती-सिद्ध–चण्डी सहस्राक्षरी - महा - विद्यायाः श्रीमार्कण्डेय-सुमेधा ऋषी, गायत्र्या-नाना छन्दांसि, नव कोटि-रूपा-श्रीमदाद्या - भगवती सिद्ध-चण्डी देवता, श्रीमदाद्या–भगवती–सिद्ध-चण्डी - प्रसादाद-खिलेष्टार्थे जपे पाठे विनियोगः ।

विनियोग के बाद साधक बताये हुए अंगों को स्पर्श करता हुआ, ऋष्यादि न्यास और अंग न्यास करे तत्पश्चात सामने सिद्ध चण्डी चित्र को स्थापित करे, और फिर हाथ जोड़ कर सिद्ध चण्डी चित्र और सहस्राक्षरी सिद्ध चण्डी महायंत्र को प्रणाम करते हुए ध्यान करे ।

ऋष्यादि न्यास

श्रीमाकण्डेय–सुमेधा-ऋषिभ्यां शिरसे नमः । गायत्र्यादि-नाना-छन्दोभ्यो नमः मुखे । नव-कोटि-शक्ति-रूपा-श्रींमदाद्या-भगवती-सिद्ध-चण्डी-प्रसादा-दखिलेष्टार्थे जपे पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

अङ्ग न्यास

ॐ श्रीं सहस्रारे । ॐ ह्लीं नमो भाले । ॐ क्लीं नमो नेत्र-युगले । ॐ ऐं नमः हस्त-युगले । ॐ श्रीं नमः हृदये । ॐ क्लीं नमः कटौ । ॐ ह्लीं नमः जङ्घा-द्वये । ॐ श्रीं नमः पादादि-सर्वाङ्गे ।

ध्यान

ॐ या चण्डी मधु-कैटभादि-दलनी या माहिषोन्मूलनी,
या धूम्रेक्षण-चण्ड-मुण्ड-मथनी या रक्त–बीजाशनी ।
शक्तिःशुम्भ-निशुम्भ-दैत्य-दलनी या सिद्धि–दात्री परा
सा देवी नव-कोटि-मूर्ति-सहिता मां पातु विश्वेश्वरी ।।

ध्यान के बाद सामने एक बड़ा तेल का दीपक लगा दे, और फिर दीपक की लौ में भगवती काली के बिम्ब को देखता हुआ, निम्न महाविद्या मंत्र का जप करे । एक रात्रि में इक्यावन मंत्र जप या १०१ मंत्र जप सम्पन्न करे, पूर्णता के लिए १०१ मंत्र जप का विधान है, एक रात में यह प्रयोग सम्पन्न हो सकता है ।

सहस्राक्षरी सिद्ध चण्डी महाविद्या मंत्र

ॐ ऐं श्रीं ह्सौं श्री ऐं ह्रीं क्लीं सौः सौः ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं जय जय महा-लक्ष्मी, जगदाद्ये, विजये, सुरा-सुर त्रिभुवन-निदाने, दयांकुरे, सर्व देव-तेजो-रूपिणि, विरंच-संस्थिते, विधि-वरदे, सच्चिदानन्दे, विष्णु-देहावृते, महा-मोहिनी, मधु-कैटभादि-घोषिणि, नित्य-वरदान-तत्परे, महा-सुधाब्धि-वासिनि, महा-तेजो-धारिणी, सर्वाधारे, सर्व-कारण-कारिणे, अचिन्त्य रूपें, इन्द्रादि-सकल-निर्जर-सेविते, साम-गान-गायनपरिपूर्णोदय कारिणी, विजये, जयन्ति, अपराजिते, सर्व-सुन्दरि, रक्तांशुके, सूर्य-कोटि-संकाशे, चन्द्र-कोटि-सुशीतले अग्नि कोटि-दहन-शीले, यम-कोटि-क्रूरे, वायु कोटि-वहन-शीले, ॐकार-नाद-बिन्दु-रूपिणि, निगमागम-भाग-दायिनी, महिषासुर-दलनि, धूम्र-लोचन-वध-परायणे, चण्ड-मुण्ड-शिरच्छेदिनि, रक्त-बीज-रुधिर-शोषिणि, रक्त-पान-प्रिये, योगिनी-भूत-वेताल भैरवादि-तुष्टि-विधायिनि, शुम्भ-निशुम्भ-शिरच्छेदिनी, निखिलासुर-बल-खादिनि, त्रिदश-राज्य-दायिनि, सर्वं स्त्री रत्न-स्वरूपिणि, दिव्य-देहिनि, निर्गुणे, सगुणे, सदसद-रूप-धारिणी, सुर-वरदे, भक्त-त्राण-तत्परे, वहु-वरदे, सहस्राक्षरे, अयुताक्षरे, सप्त-कोटि-चामुण्डा-रूपिणि, नवकोटि-कात्यायनी-रूपे, अनेक-लक्षालक्ष-स्वरूपे, इन्द्राणि, ब्रह्माणि, रुद्राणि, ईशानि, भीमे, भ्रामरि. नारसिंही, त्रि-शत-कोटि-देवते, अनन्त-कोटि-ब्रह्माण्ड-नायिके, चतुर्विशांति-मुनि-जन-संस्थिते, सर्व-ग्रन्थ-राज-विराजते, महा-काल-रात्रि, प्रकाश-कला काष्ठादि-रूपिणि, चतुर्दश-भुवन-भाव-विकारणें, गगन-वाहिनि, गामिनि, ॐकार-ह्रींकार-श्रींकार-जूंकार-औकार, सौंकार, ह्रींकार-नाना-बीज-कूट-निर्मित-शरीरे, नाना-मन्त्र-राज-विराजिते, सकल-सुन्दरी-गण-सेवितें, चरणारविन्दे, महा-त्रिपुर-सुन्दरि, कामेश-दयिते, करुणा-रस-कल्लोलिनि, कल्प-वृक्षादि-स्थिते, चिन्ता-मणि-द्वय-मध्यावस्थिते मणि-मन्दिरे निवासिनि, चापिनि, खड्गिनि, चक्रिणि, गदिनि, शङ्खिनि, पद्मिनि, निखिल-भैरवादि-पते, समस्त-योगिनी परिवेष्ठिते, कालि, कङ्कालि, तोत्तलोत्तले, ज्वालामुखि. छिन्न-मस्तके, भुवनेश्वरि, त्रिपुर-लोक-जननि विष्णु-वक्षस्थल-कारणे, अजिते, अमिते, अनुपम-चरिते, गर्भ-वासादि--दुःखापहारिणि, मुक्ति-क्षेत्राधिष्ठायिनि, शिवे, शान्ते, कुमारि, सप्तदश शताक्षरे, चण्ड चामुण्डे. महा-काली-महा-लक्ष्मी-महा-सरस्वती-त्रि-विग्रहे ! प्रसीद प्रसीद, सर्व-मनोरथान् पूरय-पूरय, सर्वारिष्टान छेदय छेदय, सर्व-ग्रह-पीडा-ज्वराग्र-भय विध्वंसय विध्वंसय, सर्व-त्रिभुवन-जातं वशय-वशय, मोक्ष-मार्गाणि दर्शय दर्शय, ज्ञान-मार्ग प्रकाशय, अज्ञान-तमो नाशय नाशय, धन धान्यादि-वृद्धि कुरु कुरु, सर्व-कल्याणानि कल्पय कल्पय, मां रक्ष रक्ष, सर्वापदभ्यो निस्तारय निस्तारय, वज्र-शरीरं साधय साधय ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा।

साधकों और उच्चकोटि के महर्षियों ने इस एक हजार अक्षर वाले सिद्ध चण्डी महाविद्या मन्त्र की बहुत अधिक प्रशंसा की है, जिस रात्रि को यह मन्त्र जप संपन्न होता है, उसी समय साधक को अनुकूलता प्राप्त होने लग जाती है, डामर तन्त्र के अनुसार इस प्रयोग को संपन्न करने पर निम्न लाभ तुरन्त अनुभव होने लगते हैं।

१- कितनी भी दरिद्रता हो, कैसा ही दुर्भाग्य हो, फिर भी इस साधना को संपन्न करने पर उनका दुर्भाग्य समाप्त होता है, और वह आर्थिक दृष्टि से उन्नति की ओर अग्रसर होने लगता है।

२- इस प्रयोग से लक्ष्मी आबद्ध हो कर कई कई पीढ़ियों के लिए लक्ष्मी का निवास घर में हो जाता है।

३- व्यापार वृद्धि के लिए तो यह अपने आप में श्रेष्ठतम प्रयोग है, यदि इस मन्त्र को भोज पत्र पर लिख उसे किसी फ्रेम में मढ़वा कर दुकान में स्थापित कर दे, तो आश्चर्यजनक उन्नति होने लगती है।

४- रोग शान्ति के लिए यह संसार का सर्वश्रेष्ठ प्रयोग है, यह प्रयोग सिद्ध करने के बाद पानी का गिलास भर कर उस पर यह मन्त्र पढ़ कर, फूंक दे कर, यह पानी रोगी को पिला दे, तो आश्चर्यजनक रूप से उसका स्वास्थ्य लाभ होने लगता है।

५- यदि इस मन्त्र के द्वारा झाड़ा दिया जाय, या जिसको भूत प्रेत बाधा हो, और उसके सामने इस मन्त्र का उच्चारण किया जाय तो भूत प्रेत उपद्रव समाप्त होते हैं और घर में अनुकूलता प्राप्त होती है।

६- यदि पानी के गिलास पर यह मन्त्र पढ़ कर उस जल को घर में छिड़क दे तो घर का कलह नित्य होने वाले उपद्रव पूर्ण रूप से समाप्त हो जाते हैं. और जीवन में अनुकूलता तथा सुख सौभाग्य बढ़ने लगता है।

७- शत्रु नाश के लिए यह अमोघ कवच है, जो साधक इस मन्त्र को सिद्ध करने के बाद (काली जयन्ती की रात्रि को १०१ बार पाठ करने पर यह मंत्र सिद्ध हो जाता है) इस मंत्र को भोज पत्र पर लिख कर उसे ताबीज में भर कर अपनी बांह पर बांध ले तो वह शत्रुओं पर पूर्ण विजय प्राप्त करता है।

८- चाहे मुकदमा कितना ही विपरीत हो रहा हो, मंत्र उच्चारण कर यदि कोर्ट कचहरी जावे तो वह तुरन्त सफलता और बदलते हुए वातावरण को अनुभव कर सकता है।

९- चाहे कितनी ही कठिन राज्य बाधा आ गई हो, और उससे निकलने का कोई उपाय दिखाई नहीं दे रहा हो तो घर में तेल का दीपक लगा कर साधक किसी भी दिन या किसी भी रात्रि को १०१ पाठ स्वयं करे, या किसी ब्राह्मण से करवा दे तो उसी क्षण से राज्य बाधा समाप्त होती है, और स्थिति अनुकूल अनुभव होने लगती है।

१०- इस प्रयोग के द्वारा ग्रह पीड़ा सभी प्रकार के विघ्न अपने ऊपर किये हुए तांत्रिक प्रयोग आदि समाप्त हो जाते है , यदि दुकान पर या घर पर किसी ने तांत्रिक प्रयोग किया हो तब भी इस प्रयोग से अनुकूलता अनुभव होने लगती है।

११- यदि किसी चित्र के सामने संकल्प ले कर इस मंत्र का जप सम्पन्न करे, तो चित्र वाला व्यक्ति या स्त्री तुरन्त वशीकरण युक्त हो जाती है , इसी प्रकार इसके द्वारा सम्मोहन वशीकरण विद्वेषण आदि प्रयोग भी सम्पन्न होते है।

१२- इस प्रयोग को सम्पन्न करने पर साधक को समस्त प्रकार की सिद्धियां प्राप्त होती है और वह सर्वत्र विजयी होता है।

फल-श्रुति

वास्तव में ही तो इस वर्ष यह प्रयोग प्रत्येक साधक को सम्पन्न करना ही चाहिए। साधना सम्पन्न होने पर जो दुर्लभ 'सिद्ध चण्डी महाविद्या यंत्र' है, उसे अपने घर में श्रद्धापूर्वक स्थापित कर लेना चाहिए, जिससे कि उसके घर में सभी दृष्टियों से निरन्तर उन्नति होती रहे और धन धान्य की समृद्धि होती हुई समस्त प्रकार के संघर्ष समाप्त हो सके। यह यंत्र साधक के लिए तो उपयोगी है ही, आने वाली पीढ़ियों के लिए भी यह यंत्र उपयोगी रहेगा।

तांत्रिक ग्रन्थों के अनुसार इस प्रयोग को काली जयन्ती के अवसर पर या किसी भी मंगलवार की रात्रि को प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है। यदि साधक एक रात्रि में १०१ पाठ किसी वजह से सम्पन्न न कर सके, तो तीन रात्रि में कुल १०१ पाठ सम्पन्न कर इस साधना को सिद्ध कर सकता है।

१९८९ वर्ष का अद्वितीय उपहार

नवद्वार कुण्डलिनी जागरण युक्त

गुरू आत्म संस्थापन सिद्धि माला

गुरू पूर्णिमा के अवसर पर हम अपने पत्रिका पाठकों और सदस्यों को कुछ विशिष्ट उपहार देना चाहते है, और इसकी योजना हम जनवरी ८९ से ही बना रहे थे।

जीवन का श्रेष्ठ उपहार या जीवन की सर्वोच्च उपलब्धि "कुण्डलिनी जागरण" होता है। शास्त्रों में परमहंस स्वामी शंकराचार्य ने इस परम्परा को प्रारम्भ किया था और उन्होंने नवद्वार युक्त अद्वितीय सिद्धी माला सम्पन्न करने का प्रयोग और विधान विश्व के सामने रखा पर यह प्रयोग और विधान इतना जटिल है, कि इस प्रकार की माला सम्पन्न करना और सिद्धियुक्त बनाना प्रत्येक गुरू के लिए संभव नहीं है।

हमने इस वर्ष इस प्रकार की उच्च कोटि की मालाएं कुछ शिष्यों को देने का निश्चय किया, यह एक ऐसी माला होती है, जो शिष्य के लिए सौभाग्यदायक और वरदान स्वरूप होती हैं, जिसे धारण करने से शरीर स्थित नवद्वार तो जागृत होते ही है, कुण्डलिनी जागरण होने से चेहरे पर एक भव्यता और साधना की गहराई भी आ जाती है।

इसके अलावा इस माला को धारण करने से गुरू अपनी समस्त सिद्धियों को लेकर उसके शरीर में और रोम रोम में समाहित हो जाते है, जिसकी वजह से उस साधक या शिष्य को समस्त सिद्धियां स्वतः प्राप्त होने लग जाती हैं और वह एक उच्च कोटि का व्यक्तित्व बन जाता है।

जनवरी से हमने इस प्रकार की श्रेष्ठ मालाए सम्पन्न और मंत्र सिद्ध करने का प्रयत्न किया, और इस लम्बे समय में हम केवल ८२ मालाएं ही तैयार कर पाये है। इस बार ये उच्चकोटि की मालाएं सर्वथा निःशुल्क शिष्यों में वितरित करने का निश्चय किया है।

जो पत्रिका पाठक अपने मित्र या स्वजन को पत्रिका सदस्य बना कर उसका एक वर्ष का शुल्क ९६)रू, पत्रिका कार्यालय में ३० जुलाई ८९ तक भेज देगा, उसी को उपहार स्वरूप यह माला भेजने की व्यवस्था हो सकेगी। हम केवल पहले प्राप्त होने वाले ८२ लोगों को ही यह माला भेज सकेंगे। जो पहले पत्रिका शुल्क भेजेगा उसी को यह माला उपहार स्वरूप प्रदान की जा सकेगी।

इसके लिए आप निम्न सूचनाएं साफ साफ अक्षरों में लिख कर भेज दें—

१- आप जिनको पत्रिका सदस्य बना रहें है, उसका पुरा नाम, और पता -:-जिन्हें पत्रिका सदस्य बनाना है।

२- आपका स्वयं का पूरा नाम और पता तथा पत्रिका सदस्य संख्या-:-जिसे उपहार भेजना है।

३- इस सूचना के साथ ९६)रु. का बैंक ड्राफ्ट या मनीआर्डर रसीद संलग्न होनी चाहिए।

४- यह सूचना रजिस्टर्ड डाक से भेजे जिससे कि आपने जिनको पत्रिका सदस्य बनाया है, उनको जनवरी से अब तक की पत्रिकाएं व आगे वर्ष भर पत्रिका भेजते रहेंगे, और आपको यह उपहार सुरक्षित रूप से भेजने की व्यवस्था हो सकेगी।

नियम यही है, कि जिनकी धनराशि पहले आयेगी, उन्हीं को उपहार भेजना संभव हो सकेगा, नयी मालाओं का निर्माण होना संभव नहीं है।

भैरव के प्रत्यक्ष दर्शन सम्भव है

कलियुग में भैरव की साधना अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गयी है, क्योंकि इससे कार्य सिद्धि तुरन्त होती हैं, और बहुत ही कम प्रयास में भैरव के प्रत्यक्ष दर्शन हो सकते है।

यों तो भैरव से संबंधित कई साधनाएं प्रचलित है, परन्तु एक महत्वपूर्ण और गोपनीय साधना आगे के पृष्ठों में दे रहा हूं, जिससे कि भैरव तुरन्त प्रसन्न होकर साधक को मनोवांछित वरदान देने में समर्थ हो पाते है।

यह साधना कृष्ण पक्ष की पंचमी से प्रारम्भ की जाती है, साधक किसी भी महीने में इस-साधना को प्रारम्भ कर सकता है, प्रातः काल उठकर साधक पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करता हुआ मन में यह विचार करे, कि मैं भैरव की साधना करने जा रहा हूं, मैं भैरव के प्रत्यक्ष दर्शन करना चाहता हूं।

साधक पूरे साधना काल में काले वस्त्रों का ही प्रयोग करे, काली धोती और ऊपर काला कुरता पहन सकता है, साधना के बाद भी वह दूसरे रंग के वस्त्रों का प्रयोग न करे।

यह साधना यदि जंगल में, शिवालय में, नदी तट पर या श्मशान में करे तो ज्यादा उचित रहता है, घर पर इस प्रकार की साधना का प्रयोग नहीं करना चाहिए, भैरव शीघ्र प्रसन्न होते है, तो जल्दी ही नाराज भी हो जाते हैं, अतः साधक को सावधानी के साथ इस प्रकार की साधना हाथ में लेनी चाहिए।

जिस दिन साधना प्रारम्भ करे, उस दिन प्रातः मसूर चने, मूंग और मौठ इन चारों धान्यों को बराबर मात्रा में लेकर पकावे और फिर इसके सोलह भाग कर सोलह पलास के पत्तों पर अपने सामने रख दें, प्रत्येक पत्ते पर तेल का दीपक लगावे और फिर इन सोलह पत्तों से पहले और अपने सामने भैरव की काल्पनिक मूर्ति या भैरव का यन्त्र स्थापित करें उसकी गंध, अक्षत्, पुष्प, धूप-दीप आदि से पूजा करे।

इसके बाद साधक हाथ में अक्षत लेकर उन्हें चारों तरफ बिखेरता हुआ आतम रक्षा मन्त्र पढे।

आत्म रक्षा मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं नमः पूर्वे। ॐ ह्रीं ह्रूं ह्रौं नमः आग्नेये। ॐ ह्रीं श्रीं नमः दक्षिणे। ॐ ग्लूं ब्लूं नमः नैऋत्ये। ॐ प्रूं प्रूं सं सः नमः पश्चिमे। ॐ म्रां म्रां नमः वायव्ये। ॐ भ्रां ब्रं म्रं फट् नमः ऐशान्ये। ॐ ग्लों ब्लूं नमः ऊर्ध्वे। ॐ घ्रां घ्रं घ्रः नमः अधोदेशे।

इसके बाद भैरव को हाथ जोड़कर नमस्कार करे।

ॐ करकलित कपालः कुण्डली दण्डपाणिम्
तरुण तिमिर नीलो व्यालयज्ञोपवीती।
ऋतुसमयसपर्य्या विघ्नविच्छेदहेतु
र्जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥

ध्यान के बाद साधक ईशान दिशा की तरफ मुंह करके भैरव मन्त्र पड़े, एक लाख मंत्र जप से यह सिद्ध हो जाता है, और भैरव प्रत्यक्ष दर्शन दे देते है।

मैंने ऊपर बताया कि भैरव का स्वरूप अत्यन्त विकराल और क्रूर होता है, अतः साहसी और दृढ़ निश्चयी व्यक्ति ही अपनी इन आंखों से उनके दर्शन करने में समर्थ हो पाते है, इसलिए स्त्रियां, वृद्ध, बालक या कमजोर एवं दुर्बल चित्त वाले व्यक्तियों को भैरव-साधना नहीं करनी चाहिए।

फिर निम्न मंत्र का जप करे, इसमें किसी भी प्रकार की माला का प्रयोग किया जा सकता है।

गृहस्थ की सुख-शांति के आठ उपाय

आये दिन गृहस्थ में लड़ाई झगड़े, मतभेद की बातें सुनने को मिलती है, पति-पत्नी में, पिता-पुत्र में या भाई-भाई में मतभेद हो जाने से घर का वातावरण अशांत और कलहपूर्ण हो जाता है।

एक घुमक्कड़ साधु ने इसके लिए कुछ प्रयोग बताये है, जिनके करने से कहा जाता है कि पारिवारिक कलह समाप्त हो जाता है, और घर में सुख-शांति का वातावरण बना रहता है।

१— नित्य प्रातः उठकर बिना स्नान किये बिना दातुन किये, एक रोटी अपने हाथों से पकाकर तेल से चुपड़ कर काले कुत्ते को खिला देनी चाहिए, इसके वाद ही नित्य कर्म सम्पन्न करने चाहिए।

२— घर में दक्षिणावर्ती शंख स्थापित कर रात्रि को उसमें जल भर रख दें तथा प्रातः काल उस जल को पूरे घर में छिड़क दे।

३— प्रत्येक शनिवार को तेल में बड़े बनाकर आकाश में उड़ती हुई चीलों को खिलाने चाहिये। प्रत्येक शनिवार को लगभग एक किलो बड़े पकाकर खिलाने चाहिये और इस प्रकार सोलह शनिवार तक करना चाहिये।

४— जहां बन्दर ज्यादा हों, वहां प्रत्येक मंगलवार को पांच किलो चने ले जाकर उन्हें खिलाने चाहिये, उसके नीचे से निकलने और आने से घर में सुख शांति बनी रहती है।

५— घर में शूकर दन्त बांध देना चाहिए, यह शूकरदन्त मुख्य द्वार के ऊपर चौखट पर बांधना चाहिये, उसके नीचे से निकलने और आने से घर में सुख शांति बनी रहती है।

६— जब कसाई किसी बकरे को काटने ही वाला हो उसी क्षण कसाई को उस बकरे का मूल्य देकर उस बकरे को बचा लेना चाहिए और ऐसे स्थान पर छोड़ देना चाहिये जहां उस बकरे की हत्या न हो सके।

७— नित्य "राम रक्षा स्तोत्र" का पाठ होना चाहिए और नियमित रूप से ४० दिन तक पाठ करना चाहिये।

८— आपत्ति उद्धारक – ॐ आपत्ति उद्धारणाय बटुक भैरवाय नमः— मन्त्र का एक लाख जप करना चाहिये।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः । क्षां क्षीं क्षूं क्षः । क्रां क्रीं क्रूं क्रः । घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रः । भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रः । भ्रों भ्रों भ्रौं भ्रों क्लों क्लों क्लों क्लों । श्रों श्रों श्रों श्रों ज्रों ज्रों ज्रों ज्रां । हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं फट् सर्वतो रक्ष रक्ष रक्ष रक्ष भैरव नाथ नाथ हुं फट् ॥

यह मन्त्र अत्यन्त शक्तिशाली है, और एक लाख मंत्र जप पूरा करते ही भैरव के दर्शन हो जाते है ।

यह साधना रात्रि को ही सम्पन्न की जाती है, और इसमें किसी प्रकार की अगरबत्ती या दीपक निरन्तर लगाने की आवश्यकता नहीं है, पहले दिन जो सोलह पलाश के पत्तों पर भोग लगाया जाता है, उसे मन्त्र जप के बाद वहीं छोड़कर आ जाना चाहिए क्योंकि भैरव का वाहन श्वान है, और सही अर्थों में वह खाद्य पदार्थ श्वान को ही समर्पित होता है ।

यदि श्मशान में श्वान उपस्थित न हो तो उस पड़े हुए धान को एकत्र कर किसी श्वान के सामने रख दे ।

खोए बालक का पता लगाया जा सकता है

आजकल अखबारों में पढ़ने को मिलता है कि छोटी मोटी परेशानियों से त्रस्त होकर जवान लड़के या लड़कियां घर से भाग जाती है, और पीछे उनके माता-पिता बन्धु बांधव परेशान होकर उसे ढूढ़ते रहते है, पर उनका पता नहीं चलता ।

इस सम्बन्ध में टाट बाबा ने एक साधना बताई थी जो कि इस प्रकार है ।

मंगलवार के दिन साधक दक्षिण दिशा की तरफ मुंह करके बैठ जाय तथा अपने चारों तरफ एक हजार दीपक लगा ले, इन दीपकों में तेल भरा हुआ हो, तथा एक व्यक्ति को नियुक्त कर दे, कि वह बराबर उन दीपकों में तेल की पूर्ति करता रहे, तेल कोई भी हो सकता है ।

फिर व्यक्ति अपने सामने उस खोये हुए बालक या व्यक्ति का फोटो रखकर निम्न मन्त्र का जप करे, यह जप चार घंटे तक बराबर होना चाहिए और इस बीच साधक को उठना नहीं चाहिये ।

मन्त्र

ॐ लुप्त भैरवाय मम अमुक अदृश्य दृष्टय् फट् स्वाहा ।

इस प्रकार तीन दिन तक करना चाहिये, तीसरे दिन साधक को मन्त्र जप के बीच में ही वह खोया हुआ व्यक्ति और उसका स्थान तथा पूरा पता स्पष्ट दिखाई दे देता है, इस प्रकार तीसरे दिन यह साधना समाप्त कर उस खोये हुए बालक को वहां जाकर देखा जा सकता है ।

यदि यह मन्त्र जप चौदह दिन तक किया जाय तो वह खोया हुआ व्यक्ति कुछ ही समय में स्वतः ही घर आ जाता है टाट बाबा के कथनानुसार उन्होंने इस प्रयोग को कई बार किया है और वे हर बार इसमे सफल रहे है

इसके बाद नित्य इस प्रकार का विधान करने की आवश्यकता नहीं है।

यह मन्त्र जप चालीस दिन में या बीस दिन में पूरा हो जाना चाहिए, जब यह विधान या मन्त्र जप पूरा होने को होता है, तो उससे तीन दिन पहले भैरव के आने की अनुभुति स्पष्ट रूप से हो जाती है, साथ ही साथ उसके पैरों में बंधे हुए घुंघरू स्पष्ट सुनाई देते है, और भैरव की अस्पष्ट आकृति भी दिखाई देने लगनी है।

जिस दिन ऐसी आकृति दिखाई दे, उसके दूसरे दिन उस भैरव की मूर्ति या भैरव के यन्त्र को नीले रंग का वस्त्र समर्पित करे, तेल ओर सिन्दूर लगावे, धूप अगर-बत्ती के साथ गुग्गुल का धूप भी समर्पित करे, उसी दिन नेवेद्य के साथ तेल में पकाए हुए गुड, आटा द्वारा निर्मित पूआ, मीठे पकोडे, तेल से चुपड़ी हुई आटे की रोटी पर गुड़ रखकर और मोठ या उड़द की दाल भिगोकर उसे पीस कर मसाले मिलाकर बडे बनाकर नेवेद्य के साथ समर्पित करे।

यदि उस दिन भैरव प्रत्यक्ष न हो तो दूसरे दिन भी ऐसा ही करे, यदि किसी कारण वश दूसरे दिन भी भैरव के दर्शन न हो तो तीसरे दिन भी वैसा ही विधान करे, उस रात्रि को निश्चय हीं भैरव के दर्शन हो जाते है।

यह हो सकता है कि भैरव विकराल रूप [में अथवा सौम्य रूप में दर्शन दे पर किसी भी हालत में डरे नहीं और नम्रता से उनका मन्त्र जप करता रहे।

जब भैरव प्रसन्न होकर वरदान मांगने को कहे, तब साधक उनके सामने तेल का दीपक लगाकर जो प्रसाद बनाया हुआ है, वह उनके दाहिने हाथ में दे दे, ऐसा करने से भैरव अत्यन्त प्रसन्न होते है और मनोवांछित वरदान दे देते है।

यह साधना रात्रि को ही संपन्न की जाती है और यदि श्मशान में या नदी तट पर साधना की जाय तो ज्यादा उचित रहता है, इस बात का ध्यान रखे कि वह स्थान सामान्यत: निर्जन हो।

साधना के संबंध में जो भी अनुभव हों, वे किसी को बतावे नहीं और पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करे तथा काले वस्त्र धारण किए रहे।

भैरव प्रसन्न होने के बाद नित्य साधक को स्वर्ण प्रदान करते है, यही नहीं अपितु जब किसी प्रकार की कोई इच्छा भैरव के सामने रखते है तो भैरव उस इच्छा की पूर्ति अवश्य ही करते है।

देश के कई विशिष्ट योगी और साधक भैरव साधना संपन्न कर चुके है, और इसी प्रकार से उन्होंने जीवन की पूर्णता प्राप्त की है, इस बात का ध्यान रखे कि यह साधना किसी योग्य गुरु या साधक की देख रेख में ही संपन्न होनी चाहिए अन्यथा कुछ विपरीत होने की स्थिति में साधक ही पूर्ण रूप से जिम्मेवार होता है।

इस साधना की पूर्णता के बाद व्यक्ति शत्रुओं पर हावी रहता है, किसी भी घटना को जानने के लिए उसे एक बार मंत्र उच्चारण करना पड़ता है तो भैरव उसके कान में कह देते है, दूसरे के मन की बात भी भैरव साधक को उसके कान में कह देते है, दूर स्थित सामान को लाकर देने में सहायक होते हैं, हजारों मील दूर की घटनाओ को प्रत्यक्ष देखते है और किसी भी व्यक्ति के भूतकाल या भविष्यकाल को जाना जा सकता है, इसके साथ ही साथ जब साधक खाद्य पदार्थ की इच्छा करता है तो उसे तुरन्त खाद्य पदार्थ प्राप्त हो जाते है। इसी प्रकार धन धान्य स्वर्ण आदि की प्राप्ति भी भैरव के द्वारा संभव है।

वस्तुत: भैरव-साधना कलियुग में महत्वपूर्ण एवं शीघ्र फलदायक है।

कालजयी : एक विशिष्ट साक्षात्कार
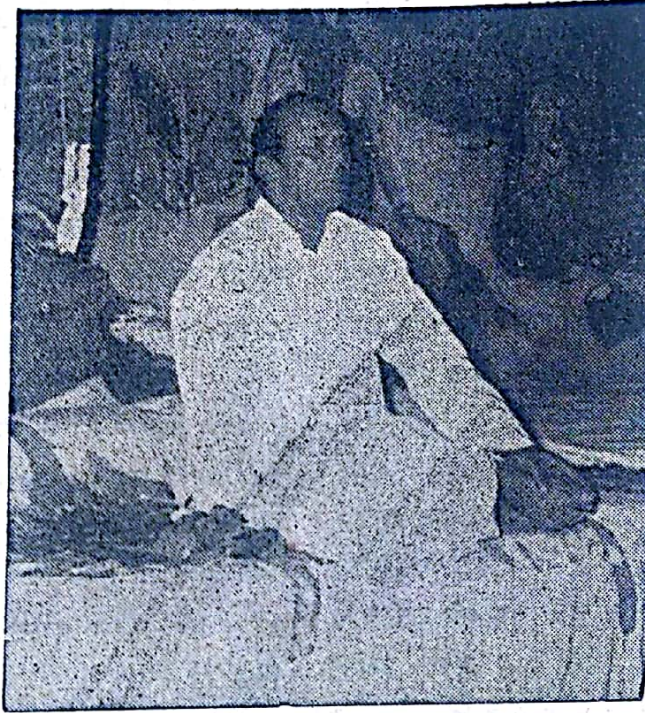
यूरोपीय टेलीविजन टीम का पूज्य गुरूदेव के साथ

यूरोपीय टेलीविजन चैनल के सलाहकार पिछले दिनों पूज्यपाद श्रीमालीजी से उनके जन्म दिन २१ अप्रेल के लिये "इन्टरव्यू" लेने के लिये अपनी टीम के साथ भारत के आये थे, उन्होंने स्वामीजी से टेलीविजन चैनल के लिये विशेष प्रश्नों के साथ इन्टरव्यू लिया था, जिसके विश्व अधिकार उन्होंने खरीद लिये है।

प्रश्न जितने सूक्ष्म और सार्वभौम है उनके उत्तर उतने ही ज्यादा गहरे, मौलिक एवं चिन्तनपूर्ण है, जिनके पीछे उनका मौलिक चिन्तन, सूक्ष्म दृष्टि और गम्भीर अध्ययन है। इन प्रश्नोत्तर की उपयोगिता भूत में भी थी, वर्तमान में तो है ही, भविष्य में भी रहेगी।

ये उत्तर समय के हस्ताक्षर है, कालपात्र पर अमिट चिन्ह है, इसीलिए अत्यन्त संकोच और विनम्रता के साथ इस साक्षात्कार का कुछ भाग पत्रिका पाठकों के लिये प्रस्तुत है।

जिज्ञासा :

श्रीमालीजी ! क्या इस स्थूल मानव शरीर में कोई सूक्ष्म शरीर भी है ? ध्यानावस्थित अवस्था में मानव के पैरों से शिखा तक जो झंकार ऊपर उठती है, और प्रकाशमान अवस्था में एक स्थान से दूसरे स्थान को गतिशील होती है, क्या यह सही है ? क्या सूक्ष्म शरीर इस स्थूल शरीर से अलग हट कर कार्य करता है ? क्या वह शहरों के ऊपर से उड़ता हुआ हजारों मील दूर कुछ ही क्षणों में जा सकता है ? क्या स्थूल शरीर निश्चेष्ट रहकर भी उस सूक्ष्म को देख सकता हैं ? यह सब कपोल कल्पना और मन का भ्रम ही है या इसमें कुछ वास्तविकता भी है ?

समाधान :

साधना के द्वारा ध्यानावस्थित होने पर पूरे शरीर में एक विशेष प्रकार की ऊष्मा भर जाती है, और उसका शरीर स्वतः ही हल्का होने लगता है। सूक्ष्म शरीर प्रत्येक मानव के शरीर में विद्यमान है, पर बिना ध्यानावस्था के यह निष्क्रिय-सा पड़ा रहता है, इसे सक्रिय बनाने के लिये "ऊर्ध्वरेता–साधना" एवं अभ्यास जरूरी है।

आकाश में उड़ना, या एक स्थान से दूसरे स्थान पर कुछ क्षणों में चले जाना सूक्ष्म शरीर के अन्दर ही विद्यमान है। जो अन्दर लघु और सूक्ष्म दिखाई देता है, वही बाहिर व्यापक और विराट है, जो कि इन दोनों का परस्पर तादात्म्य है, अतः सूक्ष्म शरीर को किसी भी स्थान पर जाने के लिये स्थूल शरीर से बाहिर आने की आवश्यकता नहीं है, वह इस शरीर में ही स्थित रहता हुआ विराट ब्रह्माण्ड से अपना तादात्म्य स्थापित कर, प्रत्यक घटना, स्थान या दृश्य को देख सकता है।

शरीर के पांच तत्वों में से एक तत्व आकाश तत्व भी है, जब साधना से योगी इस तत्व को प्रधानता देता है, तो अन्य तत्व स्वतः ही गौण हो जाते है, और सूक्ष्म शरीर का सम्बन्ध आकाश से ज्यादा व्यापक रूप में हो जाता है, यही साधना 'प्रत्यभिक-साधना' कहलाती है जिसके माध्यम से योगी अपने स्थूल शरीर को निश्चेष्ट रखकर सूक्ष्म शरीर से कहीं भी आ जा सकते है, पर इस सूक्ष्म शरीर को स्थूल आंखों से देखा जाना संभव नहीं है. इसके लिये साधनात्मक दृष्टि चाहिए जिसे साधनात्मक शब्दों में 'प्रत्यभिक्–दृष्टि' कहते है। जो इस दृष्टि को साधना के माध्यम से प्राप्त कर लेता है, वह स्वयं के सूक्ष्म शरीर को तो देख ही सकता है, अन्य सूक्ष्म शरीरों को भी विचरण करते हुए या उड़ते हुए देख सकता है।

इस महाकाश में कई योगी उड़ते हुए एक स्थान से दूसरे स्थान पर गतिशील रहते है, वे हमको देख सकते है, पर हम सामान्य दृष्टि से उन्हे देख नही पाते, वे योगी या दिव्यात्मा हमें तभी दिखाई दे सकते है जब कि हम अन्तर-प्रवेश हों, सूक्ष्म दृष्टि प्राप्त करें, 'प्रत्यभिक-साधना' सिद्ध हों।

"प्रत्यधिक्-साधना" से ही पुनः इस भौतिक देह में प्रवेश पाना संभव है, यदि यह देह विकारग्रस्त न हो गई हो। यों भी जो योगी या साधक "प्रत्यभिक्-साधना" सम्पन्न होते है, उनकी भौतिक देह काफी समय तक निश्चल रहते हुए भी सड़ांध युक्त या विकार ग्रस्त नहीं हो पाती।

ये सारी अनुभूतियां कपोल कल्पित, नहीं, अपितु सत्य है। हां, कुछ योगी "प्रत्यभिक्-साधना, से भी आगे बढे है, उन्होंने शरीर की स्थूलता का ही नाश कर दिया है और इस शरीर से (स्थूलताहीन शरीर से) वे ब्रह्माण्ड में विचरण कर सके है, नारद आदि ऐसे ही योगी थे। वर्तमान में भी ऐसे कई योगी विद्यमान है, जो इस स्तर पर है। वे अपने शरीर को स्वर्ग आदि लोकों में जाते देख सकते है, क्योंकि यह देखने का भाव तो आत्मा का है, और आत्मा कभी बंधनयुक्त नहीं रह पाती।

जिज्ञासा

स्वामीजी ! भारतीय पुराणों में ऐसी घटनाओं की भरमार है, कि कोई मनुष्य या योगी बात करते-करते अन्तर्ध्यान हो, गया या एक ही क्षण में एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंच गया, या एक ही समय में दो अलग अलग स्थानों पर देखा गया, जब कि दोनों स्थानों की परस्पर दूरी हजारों मील थी।

तार्किक दृष्टि से ये बातें गले के नीचे नहीं उतरती, क्या ये सत्य है ? क्या आज के युग में भी ऐसा संभव होता है ? क्या आपने इसका प्रत्यक्ष अनुभव किया है ? क्या इस अनुभव को या इस प्रकार की घटनाओं को हम देख सकते हैं ? इन सब में क्या सत्य है ?

समाधान :

प्रत्येक मानव के दो शरीर होते है एक तो प्राकृतिक शरीर, जो इन नंगी आंखों से देखा जा सकता है, और दूसरा सूक्ष्म शरीर, जिसका ढांचा और अन्य सभी विशेषताएं स्थूल शरीर की तरह ही होती है, पर जिन्हें इन नंगी आंखों से देखा जाना सम्भव नहीं है।

यदि साधक या योगी इस सूक्ष्म शरीर को नियन्त्रित कर सकता है, तो वह उसे इस स्थूल शरीर से अलग भी कर सकता है। यह कुण्डलिनी जागरण प्रक्रिया में सहस्त्रार खुलने के बाद विशेष क्रिया से सम्भव है, और 'प्रत्यभिक-साधना' से भी सम्भव है।

ऐसी स्थिति में वह अपने इस शरीर में से सूक्ष्म शरीर को अलग कर दूसरे स्थान पर भेज सकता है, यह दूसरा सूक्ष्म शरीर चतुर्भूतात्मक होता है (जबकि स्थूल शरीर पंचभूतों से निर्मित होता है) अतः एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने में इसे कुछ क्षण लगते है। इस शरीर की बनावट, बोल-चाल, रंग रूप सब कुछ इस स्थूल शरीर का सा ही होता है, अतः सामान्य मानव इन दोनों शरीरों के अन्तर को पहिचान ही नहीं सकता।

रासलीला के समय श्री कृष्ण ने इसी प्रकार से कई सूक्ष्म शरीर स्थापित कर प्रत्येक गोपी को आश्वस्त किया था कि वह उसके साथ है, योगीराज विशुद्धानन्द, स्वामी अदभुतानन्द प्रभृति साधकों ने कई बार इन पद्धतियों का दिग्दर्शन कराया है।

जहां तक मेरे अनुभव का प्रश्न है, मैंने देखा है, समझा है, भोगा है, परखा है, अतः इस चिन्तन में सन्देह करने की कहीं स्थिति ही नहीं है।

जिज्ञासा

क्या मनुष्य स शरीर अमर हो सकता है ? सुनते है कि कुछ योगी, तपस्वी सैंकडों वर्षों से तपस्या रत है और जीवित है ? क्या ऐसा हो सकता है ? क्या यह शरीर सैंकड़ों वर्षों तक साथ दे सकता है ? क्या आज के विज्ञान को यह प्रयोग स्पष्ट करके समझाया जा सकता है ?

समाधान :

भारतीय दर्शन के अनुसार आत्मा अमर है, उसका कभी भी क्षरण नहीं होता, जब यह शरीर जीर्ण-शीर्ण होकर घिस जाता है, और आत्मा के वेग को अपने में संभालने में अक्षम हो जाता है तब आत्मा किसी नवीन सुदृढ़ विकसित शरीर को अपना आधार बना लेती है।

अतः यह तो निश्चित है कि यदि इस शरीर को सुदृढ़ बना दिया जाय, तो आत्मा उसे छोड़ कर नहीं जायेगी।

किसी भी आत्मा को कोई नया शरीर प्राप्त करने में आनन्द नहीं आता, वास्तविकता तो यह है कि वह इस शरीर को छोड़ना ही नहीं चाहती, पर उसे छोड़ना पड़ता है, यह उसकी मजबूरी है, क्योंकि इस शरीर में "धारण क्षमता" नहीं रह जाती।

मध्यकाल में नाथ योगियों ने इस सिद्धान्त को समझा था, उन्होंने कायायोग की 'रसेश्वरी योग साधना' से अपने आपको सदेह अमर किया था, गुरू गोरखनाथ मत्स्येन्द्र नाथ ऐसे ही रससिद्ध योगी थे, जो सदेह आज भी जीवित है।

तंत्रों के अनुसार कुछ विशिष्ट नियमों से या कुछ विशिष्ट प्रक्रियाओं से इस शरीर को नाश होने से बचाया जा सकता है। "मृत्योर्माऽमृतंगमय" का घोष इसी बात का साक्षी है कि हमें मृत्यु से अमरत्व की ओर बढ़ना है।

बौद्ध तांत्रिकों द्वारा लिखे गये ग्रन्थ 'गुह्य-समाज' और 'मंजुश्री मूल कल्प' में देह को अमर बनाने की प्रक्रिया विस्तार से स्पष्ट की गई है। 'ब्रह्म-यमल' ग्रन्थ तो इस विधा के लिए आदर्श ग्रन्थ रहा है जिसके माध्यम से वर्तमान समय में भी कुछ योगियों ने प्रयोग कर अपने आपको अमरत्व प्रदान किया है। मेरी दृष्टि में ऐसे कई योगी है जो पांच सौ, सात सौ या इससे भी ज्यादा वर्षों से जीवित है, स्वस्थ है और चिर यौवन युक्त है।

एक अन्य पद्धति 'कायायोग' भी है। इसके अनुसार मानव शरीर में तीन तत्व मुख्य है, जो कि प्राण, मन और वीर्य है, इन तीनों तत्वों पर सामान्य रूप से नियंत्रण नहीं हो पाता, क्यों कि ये तीनों ही तत्व चंचल है, फलस्वरूप मानव फिसल कर अधः पतन की ओर अग्रसर हो जाता है, पर यदि इन तीनों को साध लिया जाय तो निश्चय ही मानव उर्ध्वमुखी हो सकता है, कायायोग सिद्ध करने वाले योगियों के मतानुसार 'भृंग-साधना' से इन तीनों तत्वों को नियंत्रित कर लेने से शरीर में ही 'आत्मा' तथा 'शक्ति' का सामंजस्य होकर परम सिद्धि प्राप्त हो जाती है, वह अजर अमर तो होता ही है, इसके बाद उसे अन्य किसी भी प्रकार की साधना आदि करने की जरूरत नहीं रह पाती, उसे समस्त प्रकार की सिद्धियां स्वतः ही प्राप्त हो जाती है।

इन तीनों तत्वों पर एक साथ नियंत्रण करने की जरूरत नहीं है, अपितु क्रम से एक एक तत्व पर भी नियंत्रण किया जा सकता है।

मेरे अनुभव से प्राण-तत्व पर नियन्त्रण प्राप्त करने के लिए 'मन्त्र-पद्धति' तथा वीर्य तत्व पर विजय प्राप्त करने के लिये 'वज्रोली' पद्धति श्रेयस्कर है।

यहां पर वज्रोली को संक्षेप में बता दूं, कि "वीर्य" या 'बिन्दु' या तो ऊपर जा सकता है या नीचे, जब यह नीचे की तरफ जाता है, तो उसके घर्षण से मानव जन्म लेता है, बिन्दु की यह अधोगति प्रत्येक अज्ञानी के लिए सम्भव और स्वाभाविक है, यह प्राणी को आवागमन और संसार चक्र में घुमाती रहती है, पर यही वीर्य जब ऊर्ध्वरेता बनता है, ऊपर उठता है तब 'कालाग्निरूद्र, कहलाता है। बिन्दु के ऊर्ध्वमुखी होने का सबसे बड़ा लाभ यह होता है कि कुण्डलिनी भी ऊर्ध्वमुखी बन जाती है, और सहस्त्रार चक्र से संलग्न होकर मानव को शिवमय बना देती हैं।

इसके लिये साधक को धोती, नेती, बस्ति, नौली, कपालभाति आदि क्रियाएं करके शरीर में फैली लाखों प्राणवाही नाड़ियों को शुद्ध किया जाना चाहिये।

वज्रोली के भी दो प्रकार है—पहले प्रकार में साधक यौवनगंधा स्त्री के रज को अपने वीर्य के साथ खींच कर ऊर्ध्वगामी बना देता है यह शारीरिक वज्रोली कहा जाता है, इससे कुण्डलिनी उद्घटित हों सहस्त्रार में जाकर स्थिर हो जाती है। दूसरे प्रकार में स्वयं रजमय होकर वीर्य को ऊर्ध्वगामी बनाया जाता है। दोनों ही क्रियाएं मानव के शरीर-क्षरण को रोकती है, तथा उसे चिर-यौवन मय दिव्य बनाये रखती है। स्त्री साधिकाएं भी वज्रोली के माध्यम से कुण्डलिनी को सहस्त्राधार में से झरते अमृत का पान करा सकती हैं। उसे वज्रोली के अन्तर्गत रज को ऊर्ध्वगामी बनाकर वीर्य का समायोजन करना पड़ता है।

इस बात को थोड़ा स्पष्ट कर दूं। मनुष्य के शरीर में छः तथा नौ चक्र हैं, ये सुषुम्ना नाड़ी की छः ग्रन्थियों में छः पदमाकार चक्र है, गुह्यस्थान में मूलाधार, लिंग मूल में स्वाधिष्ठान, नाभिमण्डल में मणिपूर, हृदय में अनाहत, कंठ में विशुद्ध और भ्रू-मध्य में आज्ञा चक्र है। इसके अतिरिक्त तीन और चक्र है— तालु, ब्रह्मरन्ध्र और सहस्रार। मेरी जानकारी के अनुसार आज्ञा चक्र के ऊपर मस्तक में सहस्रार कमल है, सुषुम्ना नाड़ी यहीं से अधो-मुखी होती है।

रहस्य की बात यह है कि सहस्रदल कमल के नीचे दो कलाओं के केन्द्र है, जिनमें से एक का नाम "मृत्यु-कला" और दूसरी का नाम "अमृत कला" है। सहस्र-दल से अमृत प्रपात की तरह नीचे झरता रहता है, यह झरता हुआ अमृत संसार का सर्वाधिक सुगंधित, सर्वाधिक मधुर और श्रेष्ठ है, इससे श्रेष्ठ पदार्थ विश्व में है ही नहीं, जो इसे पी लेता है वह अमर हो जाता है, न तो उसका शरीर क्षरण होता है, न जरा व्याप्त होती है और न चिन्ता परेशानी उसे सताती है।

पर यह अमृतत्व वही पी सकता है, जिसकी कुंड-लिनी जाग्रत हो चुकी होती है क्योंकि यह कुण्डलिनी की नागिन ही तो इस अमृत को पीने में समर्थ हो सकती है।

यह अमृत पान ही जीवन की श्रेष्ठता है, पूर्णता है, उच्चता और दिव्यता है, मेरे सान्निध्य में कुछ स्त्री और पुरुष-साधक इस प्रकार का दिव्यतम अमृतपान करने में समर्थ-सफल हो सके हैं, और वे आज गृहस्थ में रहते हुए भी चिरयौवन दिव्य देह युक्त है, पर यह तो व्यक्तिगत बात हो गई।

समग्रत; मानव चाहें तो इस देह को सैकड़ों वर्षो तक ऊष्मायुक्त बनाये रख सकता है।

जिज्ञासा :

क्या धरती पर दिव्य जीवन का अवतरण संभव है? क्या ऐसे दिव्य जीवन का अवतरण हो चुका है, या निकट भविष्य में होना संभव है? क्या यही दिव्य जीवन भग-वान है? आपने योग का उच्चतर जीवन जिया है, क्या आप योगबल से कोई निश्चित तारीख या समय बता सकते है, जब कि दिव्य जीवन का अवतरण होगा?

समाधान :

मानव का दूसरे मानव से भेद का आधार कलाएं होती है, जिस व्यक्ति में जितनी ही ज्यादा कलाएं होती है, वह उतना ही दिव्य, महापुरुष, ईश्वर के समकक्ष या ईश्वर होता हैं।

शास्त्रों में श्रीकृष्ण को सोलह कला पूर्ण माना है और उनके अनुसार जीवन की श्रेष्ठतम स्थिति सोलह कलाएं होती है। प्रत्येक मानव जब जन्म लेता है, तब वह एक कला के साथ ही जन्म लेता है, आगे चल कर वह ज्यों-ज्यों दिव्यता की ओर बढ़ता रहता है, कलाएं विकसित होती रहती है।

इन कलाओं के तीन आधार हैं—ज्ञान, योग और वैराग्य। ज्ञान के माध्यम से ही योग और वैराग्य के बारे में जानकारी प्राप्त होती है, यह ज्ञान ही है, श्रीकृष्ण को तो 'योगीराज' के नाम से संबोधित किया जाता रहा है वशिष्ठ ने श्रीराम को 'योगी' कह कर राम को पूर्ण योगी सिद्ध किया है उनके अनुसार श्रीराम योग-साधना; कुण्डलिनी जागरण अमृतीकरण में पूर्णता पा चुके हैं; महादेव शंकर तो योगीराज हैं ही। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि योग से ही शरीर स्थित समस्त नाड़ियों की शुद्धि, एवं अमृतीकरण पान कर 'योगीराज' का पद प्राप्त किया जा सकता है।

तीसरी स्थिति विराग या वैराग्य की है, वैराग्य का तात्पर्य घर बार छोड़ कर जंगलों में भटकना नहीं है, अपितु अमृत-तत्व-पान के बाद चित्त वृत्तियों का निरोध है, इसके लिए 'सांभवीसाधना' सहायक है; ऊर्ध्वरेता की अन्तिम सीमा सोलहवीं कला प्राप्त करना है, और यही स्थिति दिव्य जीवन की होती है जिसे लौकिक अर्थों में भगवान कहा जाता है। तुम्हारे प्रश्न के उत्तर में यही कहना है कि दिव्य जीवन का अवतरण

धरती पर ही संभव है, क्योंकि पंच भूतात्मक देह प्राप्त करने का सौभाग्य मात्र मानव को ही है, देवता, यक्ष किन्नर गन्धर्व आदि त्रिभूतात्मक या चतुर्भूतात्मक है, अतः देवता आदि भी पञ्चभूतात्मक देह धारण करने के लिए तरसते है। जहां तक मेरे योग बल से जानने की बात है, इस पृथ्वी पर दिव्य जीवन का अवतरण हो चुका है, रही बात प्रगट होने की, अपने आपको स्थापित करने की; तो यह समय अगले तीन वर्षो के अन्दर अन्दर निश्चित है, इससे ज्यादा बताना कई कारणों से उचित नहीं है।

जिज्ञासा :

योग साधना के माध्यम से परकाया प्रवेश होता है ऐसा सुना है और यूरोप में तो इसके बारे में बहुत अधिक जिज्ञासाएं एवं ऊहापोह है। ब्रिटेन के किसी पत्र में छपा था कि आपने किसी तांत्रिक सम्मेलन में परकाया प्रवेश करके दिखाया था, तब से यूरोप में इस संबंध में तर्क-वितर्क, ऊहापोह जरूरत से ज्यादा बढ़ गया हैं? यह सही है या मात्र मनगढ़ंत बातें? क्या आज के युग में ऐसे योगी हैं जो यह प्रामाणिक रूप से वैज्ञानिक तरीके से दिखा कर सिद्ध कर सके? विश्वास नहीं आता, कि ऐसा हो सकता है?

समाधान :

किसी भी तथ्य को मात्र आलोचना करने से नहीं समझा जा सकता, इसके लिये जिज्ञासु-वृत्ति आवश्यक है परकाया प्रवेश तमाशा दिखाने के लिए नहीं किया जा सकता, भगवत्पाद शंकराचार्य ने किसी विशेष प्रयोजन की सिद्धि के लिए ही परकाय-प्रवेश किया था।

जिस प्रकार हमारे चक्षुओं से रश्मियां निकल कर सामने वाले पदार्थ से टकरा कर पुनः आंखों में प्रवेश करने से ही उस पदार्थ को देख पाना संभव होता है, ठीक उसी प्रकार चित्त की भी रश्मियां होती है, जो कि विविध होती है, मूल कठिनाई अनेक रश्मियों में से किसी एक रश्मि पर नियंत्रण करना होता है, यह नियंत्रण, चित्त शून्यता से ही संभव है, क्योंकि कुण्डलिनी, सहस्त्रार-जागरण से चित्त को शून्य में परिवर्तित किया जा सकता है, और जब पूर्ण शून्यता आ जाती है, तब उस में स प्रयत्न एक ही रश्मि का प्रवेश दिया जाना संभव होता है, जब यह अवस्था प्राप्त हो जाती है, तब वह अपने प्राण को नियंत्रित कर इस देह से अपने आपको अलग खड़ा कर सकता है।

पर यहीं पर सब कुछ पूर्ण नहीं हो जाता, क्योंकि कठिनाई दूसरे शरीर में प्रवेश करने की होती है, यह प्रवेश इन्द्रियों और वृत्तियों के साथ आवश्यक है और यह अभ्यास खेचरी मुद्रा से प्राप्त किया जा सकता है।

परकाय-प्रवेश होने पर भी पुराना शरीर, या जिस शरीर से प्राण को अलग अवस्थित किया है सड़ता गलता नहीं, अपितु ऊष्मायुक्त बना रहता है, क्योंकि शरीर के तंतु चैतन्य-सक्रिय हो जाते है और उसके सारे कार्य-कलाप वैसे ही हो जाते है, जैसे पूर्व में थे।

यद्यपि सहस्त्रार—भेदन, अमृतपान तथा खेचरी मुद्रा-ध्यान कठिन है, क्योंकि खेचरी पान में जीभ के नीचे के जुडे हिस्से को चाकू से काट दिया जाता है तथा मक्खन के साथ अभ्यास कर जीभ को ज्यादा से ज्यादा बाहिर निकालने का अभ्यास किया जाता है, जब यह जीभ भ्रू-मध्य छू लेती है तब इसे मुंह में ही उलट कर कंठ तालु के मध्य स्थित अमृत-निर्झर से पान करा कर तुरीं-यावस्था प्राप्त कर ली जाती है, जिससे कि परकाय-प्रवेश सहज संभव हो जाता है।

आज के युग में भी यह संभव है, काठिया बाबा बाबा ज्योतिर्मय, स्वामी हरीदासजी, अरविन्द योगी आदि ऐसे साधक है, जो कुशलतापूर्वक परकाया-प्रवेश कर चुके है, और कई-कई दिनों तक परकाया में रह कर जीवन संचालित कर चुके है।

मंत्रमय

कुण्डलिनी जागरण

साधना

श्रावण शुक्ल ६, तदनुसार ७-८-८९ सोमवार को "सिद्धाश्रम पंचांग" के अन्तर्गत शून्य साधना जयन्ती है। यह पर्व अपने आप मे ही अत्यन्त महत्वपूर्ण है, क्योंकि उच्चकोटि के साधक इसी दिन कुण्डलिनी की मंत्रात्मक साधना सम्पन्न करते है।

इस लेख में अत्यन्त गोपनीय कुण्डलिनी का मंत्रात्मक गोपनीय प्रयोग स्पष्ट कर रहा हूं जो कि साधकों के लिए संग्रहणीय, मनन योग्य और प्रयोग करने लायक है।

कुण्डलिनी का जागरण प्रत्येक साधक के लिए आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है। जब तक मानव शरीर स्थित कुण्डलिनी के चक्रों का जागरण नहीं होता तब तक वह सिद्ध योगी नहीं बन सकता। जब तक शरीर के सभी चक्र चैतन्य नहीं होते, तब तक जीवन में पूर्णता भी नहीं आ पाती।

उपनिषदों में कुण्डलिनी जागरण के बारह तत्व स्पष्ट किये है, जो निम्न प्रकार से है—

१- कुण्डलिनी जाग्रत होने से मानव सही अर्थों में

साधक बनता है, और वह उन्नति की ओर अग्रसर होने लगता है।

२- कुण्डलिनी जाग्रत होने से साधक में यह विशेषता आ जाती है, कि वह अपने शरीर के अन्दर प्राणों को पहुंचाने की क्रिया सम्पन्न कर पाता है, और प्राणों या आत्मा को पहिचान पाता हैं।

३- कुण्डलिनी जागरण से मनःशक्ति पर उसका नियंत्रण हो जाता है, और दसों इन्द्रियों पर वह काबू रख सकता है।

४- कुण्डलिनी जागरण से साधक सहज ही ध्यानावस्था में जा सकता है, और उसकी सहज समाधि लग जाती है।

५- कुण्डलिनी जागरण से उसके शरीर की जड़ता आलस्य, रोग, न्यूनता, और बन्धन समाप्त हो जाता है, और उसका शरीर चैतन्य, स्फूर्तिवान और वेगवान हो जाता है।

६- कुण्डलिनी जागरण से वह शरीर स्थित ब्रह्माण्ड को भेदन करने की क्रिया प्राप्त कर लेता है, जिसके फलस्वरूप संसार में और ब्रह्माण्ड में कहीं पर भी कोई घटना घटित होती हैं तो वह आसानी से उसे जान लेता है।

६- कुण्डलिनी जागरण से राज योग की सिद्धि प्राप्त हो जाती है, और देह शुद्धि मनः शुद्धि और आत्म शुद्धि हो जाती है।

८- कुण्डलिनी जागरण से षटचक्र भेदन की मानसिक क्रियाएं भली प्रकार से सम्पन्न हो जाती है।

९- इस साधना से साधक सहज ही पूरे विश्व में सशरीर या सूक्ष्म शरीर से कहीं पर भी विचरण कर सकता है और उसके लिए कुछ भी अगम नहीं होता।

१०- कुण्डलिनी जागरण से सहस्त्रार भेदन हो जाता है, और वह स्वयं पूर्ण रूप से शिवमय हो जाता है।

११- कुण्डलिनी जागरण आत्मा को परमात्मा से मिलाने की क्रिया है और इसके द्वारा ही सहज ही अपने इष्ट के दर्शन हो जाते है।

१२- कुण्डलिनी जागरण प्रत्येक साधक के लिए अनिवार्य है जिसके द्वारा वह जीवन में सब कुछ प्राप्त करने में सक्षम हो पाता हैं, जो अन्य साधनाओं के माध्यम से संभव नहीं है।

कुण्डलिनी के बारे में काफी उहा पोह है, मैं इस लेख में सरल शब्दों में उन तत्वों का वर्णन कर रहा हूं जिससे कि साधक सहज ही कुण्डलिनी जाग्रत कर सके।

पहले मैं शरीर स्थित ६ चक्रों और उनके स्थान के बारे में स्पष्ट कर रहा हूं।

शरीर स्थित चक्र एवं स्थान

चक्र	स्थान	दल	मातृकायें	रंग	आकार
मूलाधार	गुदा–समीप	४	व श ष स	पीत	चतुष्कोण
स्वाधिष्ठान	लिंग के सामने	६	ब भ म य र ल	शुभ्र	अर्ध चन्द्र
मणिपूर	नाभि के सामने	१०	ड ढ ण त थ	रक्त	त्रिकोण
अनाहत	हृदय के सामने	१२	क ख ग घ ङ च छ ज झ ट ठ	धूम्र	षटकोण

विशुद्ध	कण्ठ के सामने	१६	अ आ से अं अः	श्वेत	वर्तुल
आज्ञा	भ्रूमध्य	२	ह क्ष	—	लिंगाकार
सहस्रार	मूर्धन्	१०००	प्रत्येक वर्ण २० बार	—	पूर्णचन्द्र

कुण्डलिनी से संबंधित चक्रों के बारे में जानने के बाद थोड़ा सा यह भी जान लेना चाहिए कि इनके बीज शक्ति और तत्व गुण क्या है। सूक्ष्मता के लिए मैं पाठकों की जानकारी के लिए यह स्पष्ट कर रहा हूं।

चक्र बीज	देवता	शक्ति	तत्वगुण
लं	ब्रह्मा	डाकिनी	गन्ध
वं	विष्णु	राकिनी	रस
रं	रूद्र	लाकिनी	रूप
यं	ईशान	काकिनी	स्पर्श
हं	सदाशिव	शाकिनी	शब्द
ॐ	शम्भु	हाकिनी	महत्
प्रणव	कामनाथ	कामेश्वरी	आत्म

कुण्डलिनी जागरण का सहज क्रिया रूप

कुण्डलिनी जागरण अत्यन्त सरल और सहज है, यदि साधक कुण्डलिनी जागरण का निश्चय कर ही लेता है तो वह दो तीन महीनों के अभ्यास से इसमें पूर्णता प्राप्त कर सकता है। सामान्य साधकों के लिए निम्न नियम अपेक्षित है और यदि वे इन नियमों के अनुसार कुण्डलिनी जागरण की क्रिया करे तो अवश्य ही उन्हें सफलता प्राप्त हो सकती है।

१- साधक को सबसे पहले मन में दृढ़ निश्चय कर लेना चाहिए कि मुझे हर हालत में कुण्डलिनी जागरण सम्पन्न करनी ही है और मैं इसमें पूर्णता प्राप्त कर के ही रहूंगा।

२- साधक को नेती, धोती, वस्ति आदि क्रियाओं के द्वारा देह शुद्धि का अभ्यास कर लेना चाहिए।

३- इसके बाद साधक को आठ प्रकार के प्राणायाम सीख लेने चाहिए जिससे कि सारे शरीर की जड़ता समाप्त हो सके और वह उन्नति की ओर अग्रसर हो सके।

४- साधक को इसके बाद महामुद्रा, महाबन्ध, महावेध, महत् दिव, विपरीत करणी, तारण चालन, शक्ति चालनी मुद्रा आदि का अभ्यास पूर्ण रूप से कर लेना चाहिए।

५- राज योग की विधि के अनुसार कुण्डलिनी जागरण की ओर अग्रसर होना चाहिए।

६- जो साधक कुण्डलिनी जगाना चाहते ही है, उनको चाहिए कि नित्य नियम के अनुसार प्रातः चार बजे उठ जांए और ५ बजे से ८ बजे तक कुण्डलिनी जागरण का अभ्यास सम्पन्न करे।

७- सबसे पहले भस्त्रिका प्राणायाम करे और यह नित्य ५० प्राणायाम तक करना जरूरी है।

८- इसके बाद चालिनी मुद्रा दोनों प्रकार से दस दस बार सम्पन्न करे।

९- तत्पश्चात् १०८ तक ताड़न मुद्रा प्राणायाम सम्पन्न करे।

१०- इसके बाद १०८ बार चालन प्राणायाम संपन्न करे।

११- इसके बाद साधक षट चक्र भेदन की मानसिक क्रियाएं सम्पन्न करें और यह अनुभव करे कि शरीर चक्रों का स्पर्श कर रहा है और जाग्रत कर रहा है।

१२- इसके बाद महा मुद्रा का अभ्यास २५ बार करे।

१३- फिर महाबन्ध का अभ्यास भी २५ बार करे।

१४- इसके बाद महा वेध दोनों प्रकार से दस दस बार करे।

१५- साधक को चाहिए कि फिर दस बार विपरीत करणी मुद्रा सम्पन्न करें।

१६- इसके बाद राज योग के अनुसार षटचक्र भेदन की क्रिया सम्पन्न करे।

कुण्डलिनी ध्यान

कुण्डलिनी का अभ्यास करने से पूर्व भगवती मां कुण्डलिनी का दोनों हाथ जोड़कर ध्यान करे —

सिन्दूरारूण विग्रहां त्रि-नयनां माणिक्य मौलि-स्फुरत-

तारा नायक शेखरां स्मित मुखीमापीन वक्षोरूहाम्।

पाणिभ्यां मणि पूर्ण रत्न चषकं रक्तोत्पलं विभ्रतीम्,

सौम्यां रत्न घटस्थ रक्तव्य चरणां ध्यायेत् परामम्बिकाम् ।।

कुण्डलिनी मन्त्र

शारदा तिलक तंत्र में कुण्डलिनी के बारे में विस्तार से दिया हुआ है, उसमें जिस प्रकार से कुण्डलिनी के मूल मंत्र "ऐं ह्रीं श्रीं" का उद्धार बताया है, और इस त्र्यक्षर का विनियोग ध्यान आदि स्पष्ट किया है, वह इस प्रकार है।

वाग्भवं भुवनेशी च श्री-बीजं तथैव च,
त्र्यक्षरों मन्त्र आख्यातः कुण्डलिन्याः सु-सिद्धिदः।

ऋषिः शक्तिः समाख्यातो गायत्री छन्द ईरित,
चेतना कुण्डली शक्ति देवतात्रसमीरितः।

वाग्भवं बीजमाख्यातं शक्तिः श्री बीजमुच्यते,
हृल्लेखा कीलकं प्रोक्तं कुण्डलिन्यास्तु चिन्तने।

विनियोगः समाख्यातः सर्वागम-विशारदे,
बीज त्रय-द्विरावृत्या षडंग न्यास ईरितः।

ध्यानं वक्ष्यामि कुण्डल्याः सावधानतया श्रृणु
मूलाधारे त्रिकोणे तु सूर्य कोटि समत्विषि।

प्रसुप्त भुजगाकारः सार्द्ध त्रिवलय स्थितां,
नोवार शुक्र वत् तन्वीं तडित् कोटि-सम-प्रभां।

सूर्य कोटि प्रभां दीप्तां चन्द्र कोटि सुशीतलां,
शिव शक्ति मयीं देवी शंखावर्त क्रमात् स्थितां।

सुषुम्ना मध्य मार्गेण यान्तीं पर शिवावधि,
ह्रींकार-बीज-रूपेण चिन्तयेद योग वर्त्मना।

उपरोक्त मंत्र में यह पूरी तरह से स्पष्ट है कि कुण्डलिनी का स्वरूप विन्यास और उसका तत्व क्या है, यदि साधक कुण्डलिनी मंत्र का जप ही करता रहता है, तब भी इसके बीज शरीर स्थित चक्रों को स्पर्श कर कुण्डलिनी जागरण सम्पन्न कर लेते है, इसीलिए उपरोक्त मंत्र की महत्ता तांत्रिक ग्रन्थों में स्पष्ट की है जो सामान्य साधक है, उनको इस कुण्डलिनी मंत्र का नित्य पाठ सम्पन्न करना चाहिए।

षट् चक्रों का वर्णन

मानव शरीर में मूलाधार आदि चक्रों की स्थिति जाननी जरूरी है, साथ ही साथ तीन प्रमुख नाड़ियां है, जिनके नाम इडा, पिंगला और सुषुम्णा है. मानव शरीर के पीठ में जो मेरुदण्ड है, उसके वाम भाग में बाहर की ओर इड़ा नाड़ी है और दाहिनी ओर पिंगला नाड़ी है। इन दोनों नाड़ियों के बीच सुषुम्णा नाड़ी का प्रवाह है।

१- मूलाधार–प्रथम चक्र – यह मूलाधार गुदा और लिंग के बीच में सुषुम्णा नाड़ी से वेष्ठित अधोमुख चक्र है इसका देवता पृथ्वी है, और इसका वर्ण लाल रंग का है, यह चक्र अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है और इसके जाग्रत होने से साधक सर्वथा रोग रहित हो कर पूर्ण रूप से काव्य रचना करने का अधिकारी हो जाता है।

२-स्वाधिष्ठान-दूसरा चक्र – मूलाधार के ऊपर लिंग के मूल स्थान में सुषुम्ना नाड़ी के मध्य में ६ दलों का सिन्दूरी रंग का जो कमल है, उसी को स्वाधिष्ठान कहते हैं। इसके देवता भगवान श्री विष्णु है, इसमें ध्यान करने या यह चक्र जाग्रत होने से साधक का काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि नष्ट हो जाता है, हृदय का अन्धकार दूर हो कर ज्ञान रूपी सूर्य का उदय होता है और साधक के चेहरे पर एक अपूर्व तेज दिखाई देने लगता है।

३-मणिपुर-तीसरा चक्र – स्वाधिष्ठान के ऊपर नाभि के मूल में बादलों के समान श्याम वर्ण का दस पंखुड़ियों का एक कमल है, जो लाल रंग का है इसी को मणिपूर चक्र कहा गया है। इसके देवता अग्नि देव है, इसका ध्यान करने से साधक में संहार करने की और पालन करने की शक्ति आ जाती है, और उसके कण्ठ में हमेशा हमेशा के लिए सरस्वती विराजमान रहती है।

४- अनाहत चौथा-चक्र – मणिपुर के ऊपर हृदय प्रदेश में बन्धूक पुष्प के समान बारह पंखुड़ियों का लाल रंग का जो कमल है, उसे अनाहत कमल कहा गया है। इसके देवता वायु देव है।

इस चक्र का ध्यान करने से या इस चक्र को जाग्रत करने से साधक के प्राण भगवान शिव से जुड़ जाते है, वह स्वयं बृहस्पति के समान सब शास्त्रों का जानने वाला वचन सिद्ध और ज्ञानियों में श्रेष्ठ होता हुआ परकाया प्रवेश करने की शक्ति प्राप्त करने में सक्षम होता है।

५- विशुद्ध: पांचवा चक्र– अनाहत चक्र के ऊपर कंठ देश में सोलह दलों वाले गुलाबी रंग का जो कमल है, इसके देवता भगवान शिव है। इस चक्र को जाग्रत करने से साधक पूर्ण रूप से कवि, ज्ञानी, त्रिकाल दर्शी तथा दीर्घायु प्राप्त होता हुआ लोगों का कल्याण करने वाला होता है।

६- आज्ञा: छठा चक्र – तालू और कण्ठ से आगे भौहों के बीच दो दलों वाला सफेद रंग का आज्ञा चक्र है, जिसके देवता स्वयं गुरूदेव है। इसका ध्यान करने से साधक परकाया, प्रवेश करने वाला, सब कुछ जानने वाला, कालदर्शी, परोपकारी दीर्घायु तथा भगवान शिव के समान उत्पादक, पालक, और संहारक सक्षमता रखने वाला बन जाता है।

७- सहस्रार - सातवां चक्र – आज्ञा चक्र के ऊपर परमचक्र है, और मस्तिष्क के बीच में अधोमुख एक हजार पंखुड़ियों वाला सहस्रार दल कमल है, उसे सहस्त्रार चक्र कहते है। इसके देवता स्वयं शिवमय गुरू है। इसके जाग्रत होने से साधक अपने इष्ट को देवता को पहिचानने

वाला और नये मंत्र उत्पत्ति करने वाला बन जाता है। ऐसे साधक का बार बार जन्म नहीं होता, वह सम्पूर्ण सिद्धियों में सिद्ध बन जाता है।

मंत्रात्मक कुण्डलिनी जागरण

कुण्डलिनी जागरण के दो प्रकार है, एक तो योग द्वारा अपने चक्रों का जागरण करते हुए, कुण्डलिनी को जाग्रत करते है, जो कि कठिन कार्य है, दूसरा प्रकार मंत्रात्मक कुण्डलिनी जागरण प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से एक साथ सभी चक्र जाग्रत हो जाते है और व्यक्ति अपनी कुण्डलिनी जाग्रत कर पूर्ण सिद्धि पुरुष बन जाता है। यह विषय सर्वथा गोपनीय रहा है, मैं आगे के पृष्ठों में इस गोपनीय रहस्य को स्पष्ट कर रहा हूं।

सबसे पहले साधक इस अनुष्ठान को प्रारम्भ करने से पूर्व अपने पूजा स्थान में या साधना स्थल पर अपने इष्ट देवता के स्वरूप जैसे गुरूदेव का ध्यान करे और "हूं" मन्त्र से गुरूदेव के ज्ञान को चैतन्य कर अपने अन्दर प्राप्त करने की भावना करें। फिर अपने सामने पूज्य गुरूदेव का चित्र या मूर्ति स्थापित कर **मंत्र सिद्ध परम तेजस्वी** कुण्डलिनी यंत्र की स्थापना करे, यह यंत्र अत्यन्त गोपनीय दुर्लभ और महत्वपूर्ण है। ऐसा यंत्र केवल गुरूदेव से ही प्राप्त हो सकता है। जिस साधक को ऐसा दिव्य यंत्र प्राप्त हो जाता है, वह वास्तव में ही सौभाग्यशाली माना जाता है।

इस यंत्र की स्थापन कर पुरश्चरण स्वरूप "ॐ परमतत्वाय नारायणाय गुरूभ्यो नमः" मंत्र के सवा लाख जप करे जिससे साधक पूर्ण रूप से पवित्र और चैतन्य हो कर कुण्डलिनी जागरण प्रक्रिया में आगे बढ़ सके।

जब ऐसा पुरश्चरण सम्पन्न हो जाय तब कुण्डलिनी जागरण प्रक्रिया प्रारम्भ करे और इसके लिए विनियोग करें।

कुण्डलिनी जागरण विनियोग

ॐ अस्य सर्व सिद्धिद-श्री कुण्डलिनी-महा-मन्त्रस्य भगवान महाकलो ऋषिः, विश्व-व्यापिनी महा-शक्ति-श्री कुण्डलिनी देवता, त्रिष्टुप छन्दः, माया (ह्रीं) बीज, सिद्धिः शक्तिः, प्रणव (ॐ) कीलक, चतुर्वर्ग-प्राप्तये जपे विनियोगः।

इसके बाद साधक पूर्ण ज्ञान के साथ ऋष्यादि न्यास करे—

ऋष्यादि न्यास

महाकाल - ऋषये नमः-शिरसि

विश्व व्यापिनी महाशक्ति श्री कुण्डलिनी - देवतायै नमः-हृदि।

त्रिष्टुप् छन्दसे नमः-मुखे।

माया-बीजाय नमः-लिंगे।

सिद्धि शक्तये नमः-नाभौ।

प्रणवकीलकाय नमः-पादयोः।

चतुर्वर्ग प्राप्तये जपे विनियोग नमः सर्वांगे।

इसके बाद साधक को निम्न प्रकार से षडंग न्यास करना चाहिए।

षडंग न्यास

षडंग न्यास	कर न्यास	अंग न्यास
ह्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ह्रीं	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ह्रूं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ह्रैं	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हुं
ह्रौं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र त्रयाय वौषट्
ह्रः	करतल करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

इसके बाद साधक पूर्ण मनोयोगपूर्वक दोनों हाथ जोड़ कर कुण्डलिनी का ध्यान करे—

ध्यान

ॐ नील तोयद -- मध्यस्थ -- तड़िल्लेखेव भास्वरां,
नीवार - शूक – वत् – तन्वीं पीतां भास्वदनुपमां

तस्याः शिखाया मध्ये च परमोर्ध्व – व्यवस्थितां,
स ब्रह्मा स शिवः सूर्यः शंकरः परम – विराट्।

मानस पूजा

साधक बिना किसी उपकरणों के कुण्डलिनी का निम्न प्रकार से मानस पूजन करे—

१- लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीमहा कुण्डलिनी नमः- अनुकल्पयामि।
२- हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीमहा कुण्डलिनी नमः अनुकल्पयामि।
३- यं वायुवात्मकं धूपं श्रीमहा कुण्डलिनी नमः अनुकल्पयामि।
४- रं वन्ह्यात्मकं दीपं श्रीमहा कुण्डलिनी नमः कल्पयामि।
५- वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीमहाकुण्डलिनी नमः अनुकल्पयामि।
६- शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीमहाकुण्डलिनी नमः अनुकल्पयामि।

इस प्रकार नित्य करे, और फिर निम्न गोपनीय कुण्डलिनी मंत्र का जप प्रारम्भ करे।

गोपनीय कुण्डलिनी मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः जगन्मातः सिद्धि देहि देहि स्वयम्भू-लिंगमाश्रितायै विद्युत् कोटि प्रभायै महाबुद्धि प्रदायै सहस्त्र दल गामिन्यै स्वाहा ।

यह मंत्र सूर्य के समान तेजस्वी है, और जितना भी संभव हो सके, मंत्र जप करते हुए कुल सवा लाख मंत्र जप करने है । इसमें दिनों की संख्या निर्धारित नहीं है, परन्तु सवा लाख मंत्र जप होते ही साधक की कुण्डलिनी निश्चित रूप से जाग्रत हो जाती है और वह पूर्ण रूप से सिद्धि पुरूष बन जाता है ।

नित्य जितना भी मंत्र जप हो, मंत्र जप के बाद वह किया हुआ मंत्र जप कुण्डलिनी को समर्पण कर देना चाहिए ।

जप - समर्पण

गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत् कृतं जपम् ।
त्वत्प्रसादान्मे देवि ! सिद्धिर्भवति महेश्वरि ।।

अन्त में संक्षिप्त कुण्डलिनी की स्तुति कर उस दिन का मंत्र जप सम्पन्न करना चाहिए ।

कुण्डलिनी स्तुति

ॐ नमस्ते देव देवशि । यागीश-प्राण वल्लभे ।
सिद्धिदे । वरदे । मातः । स्वयम्भू-लिंग-वेष्टिते ।।

ॐ सुप्त - भुजगाकारे । सर्वदा कारण - प्रिये ।
काम-कलान्विते । देवि । ममाभीष्टं कुरूष्व च ।।

ॐ असारे घोर-संसारे भव-रोगात् कुलेश्वरि ।
सर्वदा रक्ष मां देवि ! जन्म-संसार-सागरात् ।।

वास्तव में ही यह प्रयोग अपने आपमें अत्यन्त तेजस्वी और निश्चित सिद्धिप्रदायक है, मुझे एक घुमक्कड़ उच्चकोटि के योगी से यह पूर्ण विधि ज्ञात हुई थी, जिसे मैंने उस समय अपनी डायरी में अंकित कर लिया था, मैंने स्वयं इसका अनुभव किया है और वास्तव में ही यह अपने आप में तेजस्वी प्रयोग है ।

साधकों को चाहिए कि वे अपने जीवन को पूर्णता देने के लिए इस दुर्लभ गोपनीय और महत्वपूर्ण कुण्डलिनी जागरण प्रक्रिया को सम्पन्न कर अपनी कुण्डलिनी जाग्रत कर जीवन का आनन्द प्राप्त करें ।

कुबेर यन्त्र

कुबेर देवताओं के कोषाधिपति कहे जाते हैं, और इनकी साधना उपासना देवताओं तक ने की है. शास्त्रों के अनुसार दरिद्रता निवारण, भाग्य बाधा दोष समाप्ति एवं अद्‌भुत आश्चर्यजनक आर्थिक उन्नति के लिए यह साधना श्रेष्ठ ही नहीं, अत्युत्तम मानी जाती है ।

बिरले भाग्यशाली ही अपने घर में कुबेर यन्त्र रख पाते हैं, इस लेख में इन सब का विवेचन पूर्ण प्रामाणिकता से हुआ है, पत्रिका पाठकों के लिए दुर्लभ, गोपनीय और महत्वपूर्ण लेख........

भारतीय ग्रन्थों में कुबेर को धन का देवता माना गया है, और देवताओं में भी कुबेर को सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त है क्योंकि वह आर्थिक समृद्धि का देवता है ।

यह यन्त्र प्रामाणिक होने के साथ-साथ प्रत्येक गृहस्थ के लिये उपयोगी है । इस मंत्र का जप पुरूष या स्त्री कोई भी कर सकता है, यदि यह संभव न हो तो किसी योग्य विद्वान से भी कुबेर मंत्र के जप करवाये जा सकते है ।

विधान :

घर के पूजा स्थान में भगवती लक्ष्मी का चित्र स्थापित कर लेना चाहिए, इसके बाद उसकी केशर आदि से षोड़शोपचार पूजा करके उनमें लक्ष्मी का आह्वान करना चाहिए, इसके साथ ही इसके पास कुबेर यंत्र की स्थापना कर लेनी चाहिए ।

कुबेर यंत्र अपने आप में पूर्णतः गोपनीय रहा है । यद्यपि तंत्र से सम्बन्धित कई ग्रन्थों में कुबेर यंत्र का वर्णन आया है परन्तु इसका सही रूप में अंकन कहीं पर भी प्राप्त नहीं हुआ । लेखक इसकी खोज में था और कुछ वर्षों पूर्व उसे अपने गुरू से कुबेर यंत्र के बारे में पूर्णता से ज्ञात हुआ था, इस यंत्र के बारे में कहावत है कि पिता को चाहिए कि वह अपने पुत्र को भी कुबेर मंत्र का ज्ञान न दे, गुरू को भी चाहिए कि वह अपने जीवन में अपने

अत्यन्त प्रिय शिष्य को ही इस यंत्र का ज्ञान दे। इन सारे तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि यह यंत्र अत्यन्त गोपनीय रहा है और आज तक प्रामाणिक रूप से न तो इसका प्रकाशन हुआ है और न इसके बारे में प्रामाणिकता से साधु-सन्तों का ज्ञान ही। अटकलबाजी के सहारे वे इसके बारे में कुछ न कुछ कह देते है।

यह यंत्र अपने आप में अत्यन्त प्रभावशाली और श्रेष्ठ धनदायक यत्र माना गया है। लगभग सभी तांत्रिकों और मत्र-मर्मज्ञों ने इस यंत्र की सराहना की है। प्राचीन समय में जितने भी आश्रम थे, उन आश्रमों में पूर्ण विधि-विधान के साथ कुबेर यंत्र की स्थापना अवश्य होती थी, जिससे कि वे आश्रम धन धान्य से समृद्ध रहते थे, हजारों शिष्यों का पालन पोषण होता था और वे आश्रम राजाओं से भी ज्यादा समृद्ध माने जाते थे, उनके मूल में कुबेर यंत्र का ही प्रभाव था।

कहते है कि राजा रावण ने महादेव से कुबेर यंत्र प्राप्त किया था और इस यंत्र को सिद्ध किया था, जिसके फलस्वरूप वह और उसका राज्य पूर्णतः समृद्ध हो सका था और उसकी लंका सोने की बन गई थी।

मेरे जीवन में ऐसे कई अनुभव हुए है जिनसे यह ज्ञात होता है कि यह यंत्र अपने आप में कितना अधिक प्रभाव पूर्ण है। इस यंत्र की विशेषता यह है कि यह जीवन में पूर्ण समृद्धि देने में सहायक है, जिसके घर में यह यंत्र स्थापित होता है उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नही रहता।

पिछले कुम्भ में स्वामी प्रवज्यानन्दजी ने लगभग दस हजार साधुओं को भोजन कराया था। एक छोटे से कमरे में वे स्वयं बैठ गये थे और अन्दर से उन्होंने खाद्य सामग्री बाहर देते रहने का उपक्रम किया था। सभी साधु आश्चर्यचकित थे कि इनके पास अवश्य ही कोई न कोई ऐसी साधना है जिसके बल पर वे हजारों साधुओं को भोजन कराने में समर्थ हो सके है, जबकि वे अपने शरीर पर लंगोटी के अलावा कोई बन्धन नहीं रखते। उनकी बगल में एक छोटा-सा झोला पड़ा रहता है और उस झोले में से वे खाद्य पदार्थ निकाल-निकालकर लोगों को खिलाते रहते है।

मेरा उनसे मधुर सम्बन्ध है, और पीछे के समय में भी मैं उनसे मिल चुका था, अतः जब मैंने उनसे जिज्ञासा की कि उनके पास कौन सी साधना है जिसके बल पर वे समृद्ध है और हजारों लोगों का पेट भरने में सक्षम है, उनका भण्डारा या कोष कभी भी खाली नहीं होता।

उन्होंने मन्द-मन्द मुस्कराते हुए रहस्योद्घाटन किया कि उन्होंने कुबेर साधना सम्पन्न कर रखी है और उनके झोले में कुबेर यंत्र है, जिसके बल पर वे समृद्ध है और जितना भी द्रव्य वे चाहते है, प्राप्त हो जाता है।

आबू से आगे वशिष्ठ आश्रम है वहां पर भी एक साधु कुछ समय पहले रहते थे जिन्हें लोग नंगा बाबा कहते थे, क्योंकि वे सर्वदा नंगे रहते थे और उनके पास एक झोला था जिसमें से वे मनचाही वस्तुएं तथा खाद्य पदार्थ निकालते थे और उनके जीवन में आर्थिक अभाव कभी भी नहीं रहता था।

कुछ समय पहले उनका शरीर शान्त हो गया। मृत्यु से पूर्व उन्होंने लेखक को बुलाया था और अपने झोले से कुबेर यंत्र निकालकर देते हुए कहा था कि मेरे जीवन में जो कुछ भी है या मैं जीवन में जो कुछ प्राप्त कर सका हूं उसके मूल में यह कुबेर यंत्र ही है। तुम मेरे अत्यन्त प्रिय रहे हो, यद्यपि अब तुम गृहस्थ में चले गये हो परन्तु फिर भी तुम्हारी आत्मा उच्च है और मेरे मन में तुम्हारे प्रति अत्यन्त ऊंची भावना है, इसीलिये मैं यह कुबेर यंत्र तुम्हें देना अपना कर्त्तव्य समझता हूं।

उनका यह कुबेर यंत्र आज भी मेरे पास सुरक्षित है और वास्तव में ही कलियुग में यह यंत्र आश्चर्यजनक सफलता एवं सिद्धि देने वाला है।

पिछली दीपावली को मुझे देश के श्रेष्ठतम उद्योग-पति के यहां लक्ष्मी-पूजन के लिये निमंत्रण मिला, यद्यपि मैं व्यस्त था परन्तु उनका आग्रह ज्यादा था और पिछले बीस वर्षों से उनका मुझ से मधुर सम्बन्ध रहा है, व्यस्तता होने पर भी मैंने दीपावली को रात्रि को लक्ष्मी पूजन कराने की स्वीकृति दे दी।

जब मैं पूजन कराने के लिये बैठा तो उन्होंने तिजोरी में से निकालकर एक यंत्र मेरे सामने रखा और बताया कि पिछली तीन पीढ़ियों से हम इस यंत्र की पूजा दीपावली की रात को करते है। मेरे पड़दादा को यह यंत्र एक उच्चकोटि के महात्मा ने दिया था और कहा था कि यह यन्त्र घर की तिजोरी में रख देना और नित्य एक बार इसका दर्शन कर लेना, साथ ही साथ दीपावली की रात्रि को इसका पूरी तरह से पूजन करके पुनः तिजोरी में रख देना।

तब से हम प्रत्येक दीपावली को इस यन्त्र की पूजा करते आ रहे है। मेरे पिताजी ने यह यंत्र मुझे दिया था और अब यह परम्परा बन गई हैं कि सबसे बडे पुत्र को ही यह यन्त्र दिया जाय। आज हम जो कुछ भी है इस यंत्र के फलस्वरूप ही है, ऐसा मेरे पिताजी ने मुझे कहा था। मुझे ज्ञात नहीं है कि यह यन्त्र क्या है, और इस यंत्र का क्या नाम है ?

मैंने जब उस यंत्र का ध्यान पूर्वक अवलोकन किया तो मैं सुखद आश्चर्य में डूब गया क्योंकि वह मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त कुबेर यंत्र ही था। इसी प्रकार के यन्त्र को मैं आबू में नंगे बाबा से प्राप्त कर चुका था, और इसी यन्त्र को मैं कुम्भ में प्रवज्यानन्दजी के पास देख चुका था।

वास्तव में ही यह यंत्र अपने आप में यन्त्र राज है और पूरे तन्त्र-मन्त्र के ग्रन्थों में इस यन्त्र को सबसे अधिक महत्व दिया गया है, यह अलग बात है कि यह यन्त्र अपने आप में गोपनीय रहा है और सामान्य व्यक्तियों को सुलभ नहीं हो सका है।

यह यन्त्र धातु का बना होना चाहिए, साथ ही साथ यह यन्त्र केवल विजय काल में ही निर्मित होना चाहिए। जब इस यन्त्र का निर्माण हो जाय तब पूर्ण विधि विधान के साथ प्रतिष्ठा और चैतन्य विधान होना चाहिए जिससे कि यह यन्त्र पूर्ण प्रभाव युक्त हो सके।

इस प्रकार का यन्त्र स्वयं ही सिद्ध होता है। किसी जटिल विधि विधान की आवश्यकता नहीं होती। गृहस्थ को चाहिए कि शुभ स्थान पर इस यंत्र को स्थापित कर देना चाहिए और नित्य इसके दर्शन तथा इसके सामने संभव हो तो अगरबत्ती व दीपक लगाना चाहिए। यह जिसके घर में या जिसके पास होता है उसी को फलदादायक होता है। किसी विशेष नाम से यंत्र का निर्माण नहीं होता। जिस प्रकार जहां पर भी दीपक लगाया जाता है वहीं रोशनी हो जाती है, ठीक उसी प्रकार यह यंत्र जिस घर में भी होता हैं उसी घर को ऊंचा उठाने व पूर्ण समृद्धि, सुख एवं सौभाग्य देने में सहायक होता है।

इस प्रकार मन्त्रसिद्ध होने के बाद इस पर पांच लाख मन्त्र जप करने से चैतन्य होता है।

विधान :

सर्व प्रथम इस यन्त्र का निर्माण किसी सुपात्र या अच्छे वर्ण वाले व्यक्ति से विजय काल में ही कराना चाहिए, फिर इस यंत्र का षोडशोपचार पूजन कर इसमें प्राण प्रतिष्ठा करनी चाहिए।

प्राण प्रतिष्ठा के बाद निम्न विनियोग करना चाहिए -

विनियोग :

अस्य कुबेर मंत्रस्य विश्रवा ऋषिः वृहती छन्दः। शिवमित्र धनेश्वरी, दारिद्रय विनाशन पूर्ण समृद्धि सिद्धचर्ये जपे विनियोग।

ध्यान :

मनुजवाह्यविमान वरस्थितं गरुड़रत्ननिभं निधिनायकम्।
शिवसखं मुकुटादिविभूषितं वरगदे दधतं भज तुंदिलम्॥

विरोचन :

इसके बाद कर न्यास और अंग न्यास करना चाहिए तथा सर्वतोभद्र मंडल बनाकर उस पर इस यंत्र को स्थापित करना चाहिए। उसके सामने ग्यारह दीपक लगाकर यंत्र दुग्धारा देते हुए निम्न मन्त्र से अभिषेक करना चाहिए।

मंत्र

ॐ श्रीं ॐ ह्रीं श्रों ह्रीं क्लीं श्रीं क्लीं वित्तेश्वराय नमः।

तत्पश्चात् दस हजार पुष्पों से अभिषेक कर पुष्पांजली देनी चाहिए और उस यंत्र पर निम्न कुबेर मंत्र का पांच लाख मंत्र जप करना चाहिए, तब यंत्र सिद्ध होता है।

कुबेर मंत्र

ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धनधान्यादिपतये धनधान्य समृद्धि मे देहि दापय स्वाहा।

जब पांच लाख मंत्र जप हो जाय तब उसका दशांश घृत यज्ञ करना चाहिए जिससे कि यन्त्र सिद्ध हो जाता है।

इस प्रकार का सिद्ध यन्त्र अपने आप में ही दुर्लभ होता है और यह यन्त्र वास्तव में ही यन्त्रराज कहलाने में समक्ष है क्योंकि जब आज के युग में मानव की प्रतिष्ठा, सम्पत्ति आदि से ही आंकी जाती है तब प्रत्येक व्यक्ति का या गृहस्थ का कर्त्तव्य है कि वह पूर्ण भौतिक उन्नति और आर्थिक समृद्धि प्राप्त कर जीवन की उच्चता प्राप्त करे।

परन्तु केवल मात्र प्रयत्न या परिश्रम से ही सब कुछ संभव नहीं होता, परिश्रम के साथ ही साथ यदि मन्त्र आदि का सहारा लिया जाय तो निश्चय ही वह पूर्ण उन्नति और समृद्धि प्राप्त कर सकता है।

आर्थिक-उन्नति, व्यापार-वृद्धि एवं पूर्ण सुख सौभाग्य प्राप्त करने के लिये इससे श्रेष्ठ न तो कोई साधना है और न कोई यंत्र ही।

इस यन्त्र की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि नित्य इसका पूजन आवश्यक नहीं है, अपितु केवल मात्र इसके दर्शन ही पर्याप्त है। इस यन्त्र को घर के पूजा स्थान में, फैक्ट्री में, कारखाने में उद्योग स्थान पर स्थापित किया जा सकता है, स्थापित करते समय भी किसी प्रकार की विधि विधान की आवश्यकता नहीं होती, केवल मात्र इसकी उपस्थिति ही कुबेरवत् उन्नति देने में समर्थ है।

वास्तव में ही हम भारतवासी सौभाग्यशाली है कि हमारे पूर्वजों ने इतने श्रेष्ठ मंत्र, और साधनाओं को हमारे सामने रखा और हम उसका लाभ उठाने में समर्थ हो सके पर जैसा कि तुलसीदास जी ने कहा है "सकल पदारथ है जग मांही, भाग्यहीन नर पावत नांहीं।" अतः इस प्रकार का यन्त्र भाग्यशाली व्यक्ति ही अपने घर में स्थापित कर सकते है।

जीवन में पूर्णता, श्रेष्ठता, दिव्यता, उच्चता, समृद्धि सुख-सौभाग्य, व्यापार वृद्धि, आर्थिक उन्नति, पुत्र-सुख, दीर्घायु, स्वस्थता, एवं सभी प्रकार के सुख-सौभाग्य प्रदान करने में यह यन्त्र समर्थ है क्योंकि अष्ट लक्ष्मी साधना, का समावेश स्वतः ही कुबेर यंत्र में हो जाता है।

अभी तक यह यन्त्र गोपनीय रहा है, परन्तु मेरा कर्त्तव्य है कि मैं पत्रिका के सदस्यों से इस गोपनीयता से परिचित कराऊं और वे इस मंत्र और यंत्र का पूर्ण लाभ उठाकर जीवन में सभी प्रकार से पूर्णता प्राप्त कर सकें।

यत्रास्ति भोगो न च तत्र मोक्षो
यत्रास्ति मोक्षो न च तत्र भोगः।
श्री सुन्दरी सेवन तत्पराणां
भोगस्य मोक्षस्य करस्थ एव।।

अर्थात जहां भोग है वहां मोक्ष नहीं है, और जहां मोक्ष है वहां भोग नहीं है, परन्तु देवी सुन्दरी के सेवन में तत्पर साधकों के लिए भोग और मोक्ष दोनों सुविधायुक्त प्राप्य हैं।

अतीत के झरोखे से

छाया से भी अधिक साथ देने वाला

स्वामी निर्भयानन्द

स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी के वर्णन के बिना हिमालय का वर्णन अधूरा है, हिमालय स्थित साधना, सन्यासी, योगी और तपस्वियों का जब भी जीवन लिखा जायेगा तो उसमें सबसे प्रखर-उभर कर आने वाला नाम होगा – स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी ।

इस स्तम्भ में हम उन योगियों के वर्णन प्रस्तुत कर रहे हैं, जो स्वामीजी के साथ रहे हैं, उनके सहयोगी के रूप में, आज्ञापालक के रूप में और सहायक के रूप में, ऐसे ही योगियों में एक नाम है – स्वामी निर्भयानन्द, जो सात वर्षों से भी ज्यादा समय तक स्वामी निखिलेश्वरानन्दजी के साथ रहे........

स्वामी निखिलेश्वरानन्द एक प्रखर व्यक्तित्व था हिमालय का, मैंने उसे देखा है और निकट से जानने का प्रयत्न किया है। साहस और हिम्मत का एक सागर सा लहराता रहता था, उसके हृदय में। साधना के क्षेत्र में नित नये प्रयोग करना उनका स्वभाव था, यदि यह ज्ञात होता कि हिमालय के उस स्थान पर पहुँचना कठिन है, तो उसमें जिद की प्रवृत्ति जरूरत से ज्यादा आ जाती और उसी दिन से उसके मन में यह धारणा बन जाती कि मुझे उस स्थान पर हर हालत में पहुंचना ही है, और जब तक हिमालय के उस दुर्गम और अगम्य स्थान पर नहीं पहुंच जाते, तब तक उसे चैन नहीं मिलता, यदि कोई उसके सामने यह कह देता, कि इस प्रकार की

साधना तो संभव ही नहीं है, तो वह उस साधना के पीछे पागल की तरह झपट पड़ता, उसके बारे में जितनी भी जानकारी होती, इकट्ठा करता, यदि उसे यह ज्ञात होता कि इस साधना के बारे में जानने वाला व्यक्ति चाहे हिमालय के दूसरे कोने पर बैठा हुआ है, तो भी वह वहां जाता और उससे जब तक वह साधना रहस्य प्राप्त नहीं कर लेता, तब तक चैन से नहीं बैठता, एक अजीब सा तूफान था, उसके हृदय में।

उसका सारा शरीर अपने आप में ही आकर्षक और प्रभावपूर्ण था, शरीर पर केवल अधोवस्त्र ही पहने रहता, न तो अन्य किसी प्रकार का सामान अपने साथ रखता, और न किसी प्रकार की संग्रहवृत्ति उनके मन में थी। उसे यह विश्वास था कि मैं जब भी और जो भी चाहूंगा मुझे प्राप्त हो ही जायेगा, और यह विश्वास ही उसके जीवन की पूर्णता और उन्नति का आधार थी।

आर्यों की तरह उसका भरा पूरा वक्षस्थल अपने आपमें ही प्रभावपूर्ण था, जो देखने वाले को तहस नहस कर देता था, और उसके पास था, दूसरों को पूर्ण रूप से सम्मोहक और प्रभावपूर्ण बना देने वाला चुम्बकीय व्यक्तित्व, जिसकी वजह से प्रत्येक सन्यासी और योगी उनके सम्पर्क में आने के लिए लालायित रहता, उनके मन में यह लालसा और इच्छा बनी रहती कि जैसे भी हो, निखिलेश्वरानन्द के सम्पर्क में जाना ही है, किसी भी हालत में एक आध दिन उसके साथ व्यतीत करना ही है, परन्तु ऐसा बहुत कम संभव हो पाता, क्योंकि निखिलेश्वरानन्द स्वयं अपने कार्यों में अपनी साधनाओं में और अपनी उच्चता में ही व्यस्त रहने वाला व्यक्ति था। उस समय हिमालय के लगभग सभी स्थानों पर उसकी चर्चा थी. प्रत्येक सन्यासी की जबान पर उसका नाम था प्रत्येक योगिनी और सन्यासिनी उसके बारे में चर्चा करती रहती, एक प्रकार से यह व्यक्तित्व किंवदन्ती सा बन गया था, हिमालय में।

और इसके कई कारण थे, उसका सुदृढ और बलिष्ठ शरीर निमंत्रण देता हुआ सा प्रतीत होता था। समुद्र के समान उसका वक्षस्थल सामने वाले को चौंधिया देने के लिए काफी था। साधना के क्षेत्र में उसके पास जो उपलब्धियां थी, वे सैकड़ों सन्यासियों के पास मिल कर के भी नहीं थी। उसके हृदय में जितना तूफान और जोश था, वह अपने आपमें आश्चर्यजनक था, निरन्तर भ्रमण करता हुआ एक स्थान से दूसरे स्थान पर विचरण करता हुआ, हिमालय के नित्य नवीन स्थानों को खोजता हुआ, दुर्लभ और अगम्य स्थानों की यात्रा करता हुआ, और उच्चकोटि के सन्यासियों के बीच रहता हुआ, वह व्यक्तित्व अपने आप में ही हिमालय का एक प्रतिरूप सा बन गया था, उस समय उसकी चर्चा हिमालय के चप्पे-चप्पे पर थी, उस समय उसके बारे में इतनी अधिक कहानियां प्रचलित हो गई थी, कि समझ नहीं पड़ रहा, था, कि क्या यह सब सही है, परन्तु जब उन कहानियों के मूल में जाने की कोशिश की जाती तो वे सही उतरती और यह सब देख सुन कर आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता।

वह !

आर्यों की तरह उसका भरा पूरा वक्षस्थल अपने आप में ही प्रभावपूर्ण था, जो देखने वाले को तहस नहस कर देता था, और उसके पास था, दूसरों को पूर्ण रूप से सम्मोहक और प्रभावपूर्ण बना देने वाला चुम्बकीय व्यक्तित्व, जिसकी वजह से प्रत्येक सन्यासी और योगी उसके सम्पर्क में आने के लिए लालायित रहता, उनके मन में यह लालसा और इच्छा बनी रहती कि जैसे भी हो, निखिलेश्वरानन्द के सम्पर्क में जाना ही है, किसी भी हालत में एक आध दिन उसके साथ व्यतीत करना ही है।

अन्धकार में प्रकाश की लहर

बचपन से ही उसके मन में हिमालय के प्रति प्रेम और आकर्षण रहा. इसीलिए जब उसने होश सम्भाला तो सारे बन्धनों को सारे संबंधों को नकारता हुआ वह हिमालय की ओर चल पड़ा और उस समय पूरे हिमालय में कोई साधु या योगी कहीं दूर बैठा हुआ साधना कर रहा है, तो कोई साधु या सन्यासी वहीं और, उनमें परस्पर कोई संबंध साहचर्य नहीं था, सब अपने आपमें अलग अलग से थे। एक प्रकार से देखा जाए तो परस्पर एक सूत्रता की कमी थी, और इसीलिए यह स्पष्ट नही था कि हिमालय में कहां कहां पर उच्च कोटि के सन्यासी योगी या साधक है, उनके पास क्या सिद्धियां है, उनसे कैसे सम्पर्क कायम किया जा सकता है' सब कुछ अज्ञात सा था, सब कुछ अन्धकार से ग्रस्त सा था।

और ऐसे ही समय में एक प्रखर किरण के रूप में निखिलेश्वरानन्द हिमालय में आया, और उसने इन बिखरे हुए सूत्रों को जोड़ने की क्रिया प्रारम्भ कर दी। एक दूसरे को समीप लाने, एक दूसरे से परिचित कराने में उसने सेतु का काम किया। उनके मन में यह भावना भर दी कि अलग बैठे रहने से कुछ भी संभव नहीं है। यदि जीवन में कुछ प्राप्त करना है, तो परस्पर एक दूसरे के सहयोग से ही ज्ञान साधना की उन्नति हो सकेगी। एक दूसरे को ज्ञान का आदान प्रदान करने से ही जीवन में पूर्णता आ सकती है, और इसके लिए उसने हिमालय में स्थान स्थान पर सन्यासियों के सम्मेलन प्रारम्भ किये, उनके अहं को टटोला, उनके गरूर और उनके घमंड को नीचा करने का प्रयत्न किया, उनको अहसास दिलाया कि मैं तुमसे साधनाओं और सिद्धियों के क्षेत्र में किसी भी प्रकार से कम नहीं हूं फिर भी यदि तुम्हारे पास आया हूं तो इसके पीछे मेरा कोई स्वार्थ नहीं है अपितु हिमालय को एक सूत्र में बांधने की प्रक्रिया है, पूर्वजों के ज्ञान को स्थायित्व देने की क्रिया है, साधनाओं को प्रामाणिकता के साथ उजागर करने की भावना है।

और इसके कई कारण थे, उसका सुदृढ़ और बलिष्ठ शरीर निमंत्रण देता हुआ सा प्रतीत होता था, समुद्र के समान उसका वक्षस्थल सामने वाले को चौंधिया देने के लिए काफी था, साधना के क्षेत्र में उसके पास जो उपलब्धियां थी, वे सैकड़ों सन्यासियों के पास मिल कर के भी नहीं थी, उसके हृदय में जितना तूफान और जोश था, वह अपने आप में आश्चर्यजनक था, निरंतर भ्रमण करता हुआ एक स्थान से दूसरे स्थान पर विचरण करता हुआ, हिमालय में नित्य नवीन स्थानों को खोजता हुआ, दुर्लभ और अगम्य स्थानों की यात्रा करता हुआ, और उच्चकोटि के सन्यासियों के बीच रहता हुआ, वह व्यक्तित्व अपने आप में ही हिमालय का एक प्रतिरूप सा बन गया था, उस समय उसकी चर्चा हिमालय के चप्पे-चप्पे पर थी।

और यह बात उनके समझ में आई भी, उन्होंने अहसास किया कि जो सामने व्यक्तित्व खड़ा है, वह हम से कई मायनों में बढ़ चढ़ कर है, हम से ज्यादा सिद्धियां इसके पास है, हम से ज्यादा अनुयायी इसके आगे पीछे घूम रहे है और ऐसा करके उसने एक महान कार्य किया। बिखरे हुए सन्यासियों को मंच दिया, उनको एक रास्ता दिया, उनको परस्पर मिलने, ज्ञान का आदान प्रदान करने का अवसर दिया, और उससे जो जड़ता थी, जो स्थिरता थी वह दूर हुई, पूरे हिमालय में एक हलचल सी हुई, एक अहसास हुआ कि बहुत कुछ कार्य करना बाकी है, यदि हमारे पास दो चार साधनाएं या दो चार सिद्धियां है,

तो उनसे सब कुछ प्राप्त नहीं हो सकेगा, वे तो ठीक वैसा ही है जैसा कि कोई व्यक्ति सूंठ को प्राप्त कर वैद्य बन जाय।

स्वामी निर्भयानन्द

पर इस भाग दौड़ से वह थक सा गया था, निरन्तर घूमते रहना, और जो समय बच जाय वह साधना में व्यतीत कर देना, अपने आपमें कठिन कार्य था। कई हजार मील फैला हुआ हिमालय, तिब्बत, नेपाल, मानसरोवर, आदि इतनी अधिक दूरी पर थे, कि उन सब को समेटना आसान कार्य नहीं था, परन्तु उसकी तो एक ही लगन थी, कि यह कार्य अगर अभी नहीं हुआ, तो भविष्य में कभी भी नहीं होगा, यदि इन सन्यासियों को इस समय एक सूत्रता में आबद्ध नहीं किया तो ये सन्यासी या योगी कभी भी संगठित नहीं हो सकेंगे, यदि अभी उनके अहंकार को दूर नहीं किया तो ये अपने ही घेरे में सांसें लेते रहेंगे, और इसके लिए जिस भाग दौड़ की आवश्यकता है, वह तो करनी ही पड़ेगी।

इससे भी ज्यादा तनाव का कारण था, उसके बेतहासा बढ़ते हुए शिष्य। वह कहता कि मुझे शिष्यों की जरूरत नहीं है, मैं भीड़ को नहीं चाहता, मुझे प्रदर्शन या दिखावा पसन्द नहीं है, मैं अपने जीवन में एक विशेष उद्देश्य को लेकर आया हूं और वह उद्देश्य मुझे पूरा करना है परन्तु इतना होने के बावजूद भी भगवे वस्त्र पहने सन्यासी उसके चारों ओर बने रहते. वह जहां भी जाता, सन्यासी शिष्य और शिष्याएं उससे पहले ही पहुंच जाती, उन सब की आकांक्षा होती कि वे गुरू रूप में प्राप्त हो जांय उन लोगों की एक ही इच्छा होती कि, यह व्यक्तित्व उन्हें शिष्य रूप में स्वीकार कर ले। एक बार सिर पर हाथ रख दे, एक बार अपने होठों से उनके लिए "शिष्य" शब्द उच्चरित कर दे, बाद में तो बाकी सब कुछ अपने आप हो जायेगा, परन्तु यही तो कठिन था।

उसने क्या नहीं किया, निखिलेश्वरानन्द के तनाव को दूर करने के लिए बराबर उसके साथ बना रहा। दूसरे सन्यासियों के कुचक्र पहले से ही भांप जाता, और बिना निखिलेश्वरानन्द को पूछे ही उनके कुचक्रों को तहस नहस कर डालता, समय पड़ने पर पन्द्रह बीस बदमास सन्यासियों पर वह भारी पड़ता, और इसकी भनक भी निखिलेश्वरानन्द को नहीं लगने देता।

पर इससे निखिलेश्वरानन्द की व्यस्तता जरूरत से ज्यादा बढ़ गई, निरन्तर श्रम करते रहने से थकावट के चिन्ह उसके चेहरे पर स्पष्ट रूप से झलकने लगे, निरन्तर यात्रा करने से उसका शरीर शिथिल सा प्रतीत होने लगा शिष्यों की अथवा सन्यासियों की भीड़ चारों तरफ घिरी रहने से उसके तनाव में वृद्धि सी होने लगी।

और इसके अलावा तनाव के और भी कई कारण थे, जो जमे हुए तथा कथित गुरू या सन्यासी थे, उनको यह सब कुछ अच्छा नहीं लग रहा था, वे इस आते हुए तूफान को देख कर भयभीत से थे, क्योंकि उनके पास कोई आधार नहीं था, साधना की कोई शक्ति नहीं थी, उनके पास था, केवल आडम्बर तथा प्रदर्शन, और इसी के बल पर उन्होंने सन्यासियों की भीड़ अपने आश्रम में एकत्र कर रखी थी, और इस भीड़ की बदौलत ही वे "गुरू" कहला रहे थे।

पर जब सन्यासियों और शिष्यों की भीड़ छंटने लगी तो उनके हृदय में जलन सी पैदा हुई, और ऐसे कमजोर सन्यासी और कुछ नहीं कर सकते, मार तो सकते ही है। अपने शिष्यों से उस पर प्रहार तो करवा ही सकते है, और ऐसा कई सन्यासियों ने किया भी, ऊपर से बड़े-बड़े

पत्थर उनके ऊपर लुढका देना या जहां वो ठहरे हुए है, उस कुटिया में आग लगवा देना, या जब वो अकेले हो, तो सन्यासियों और शिष्यों के द्वारा उन पर आक्रमण करवा देना, उनका स्वार्थ साधन बन गया था क्योंकि निखिलेश्वरानन्द के होने से उनके प्रदर्शन में उनके आडम्बर में न्यूनता आ रही थी, उनकी आय के स्रोत कमजोर होने लगे थे और निरन्तर विविध प्रकार के प्रहार होने से भी यह व्यक्तित्व तनाव में था। बाहर से यह जितना ही ज्यादा संयत बने रहने का उपक्रम करता उतना ही ज्यादा अन्दर से वह परेशान रहता।

इस तनाव का प्रभाव भी उसके चेहरे पर और उसके शरीर पर पड़ने लगा था, निरन्तर दबाव से उसके कार्य में शिथिलता सी आने लगी थी, इसमें तो कोई दो राय नहीं, कि यह व्यक्तित्व प्रारम्भ से ही जिद्दी और दृढ़ निश्चय वाला रहा है, खतरों से खेलने की आदत पड़ गई है इसे, चुनौतियों को झेलने में इसे आनन्द आता है परन्तु विश्वास घात अपने आपमें तनाव का एक प्रबल कारण बनता जा रहा था।

और ऐसे ही क्षणों में एक युवा सन्यासी इनके संपर्क में आया, जिसे निर्भयानन्द कहा जाता था, वास्तव में ही यह सन्यासी अपने आपमें बलिष्ठ, साहसी और हिम्मती तो था ही, साथ ही साथ अपने नाम के अनुरूप निर्भय भी था। भय तो उसके पास ही नहीं फटका था, वह निखिलेश्वरानन्द की छाया की तरह उसके साथ रहने लगा।

साल भर के भीतर तो वह निखिलेश्वरानन्द का प्रिय शिष्य बन गया, उसके बिना निखिलेश्वरानन्द की कल्पना ही नहीं हो पा रही थी, जहां निखिलेश्वरानन्द थे, वहीं निर्भयानन्द भी था, ऐसा अहसास होने लग गया था। एक प्रकार से वह निखिलेश्वरानन्द की छाया सा बन गया था।

उसने क्या नहीं किया, निखिलेश्वरानन्द के तनाव को दूर करने के लिए बराबर उसके साथ बना रहा। दूसरे सन्यासियों के कुचक्र पहले से ही भांप जाता, और

किसी भी प्रकार के तनाव को पहले अपने ऊपर झेल लेता, किसी भी प्रकार की बात चीत को वह पहले स्वयं स्वीकार कर लेता, और कुटिया के बाहर ही उसका समाधान कर देता, सन्यासियों के सम्मेलन की व्यवस्था करता, उन्हें निमन्त्रण भेजता, एकत्र करता और सबसे बड़ी बात यह कि उन पर कंट्रोल बनाये रखता, वास्तव में ही निर्भयानन्द सेवा की साकार प्रतिमा थे, शिष्य का जो स्वरूप होना चाहिए, वह निर्भयानन्द के माध्यम से जाना जा सकता है।

बिना निखिलेश्वरानन्द को पूछे ही उन कुचक्रों को तहस नहस कर डालता, समय पड़ने पर पन्द्रह बीस बदमास सन्यासियों पर वह भारी पड़ता, और इसकी भनक भी निखिलेश्वरानन्द को नहीं लगने देता।

निखिलेश्वरानन्द के छोटे से छोटे कार्य का वह बराबर ध्यान रखता, उनके चारों ओर उमड़ती हुई भीड़ को नियंत्रित करता, और उस भीड़ में से उन मोतियों को निकाल लेता, जो वास्तव में ही आगे जाकर सफल शिष्य या साधक बन सकते थे। बाकी लोगों को दृढ़तापूर्वक भगा देता। इस बात का पूरा ध्यान रखता कि निखिलेश्वरानन्द को किसी प्रकार का कोई तनाव न हो। कोई समस्या की बात उन तक पहुंचे ही नहीं, इसके लिए यह बराबर प्रयत्नशील बना रहता। एक क्षण भी निखिलेश्वरानन्द को वह अकेला नहीं छोड़ता, छाया की तरह उसके साथ बना रहता, रात को जब निखिलेश्वरानन्द थक कर चूर हो कर लेट जाते, तो निर्भयानंद उनके पैरों की मालिस करता, और तब तक पैर दबाता रहता, जब

तक कि उन्हें नींद नहीं आ जाती।

सुबह निखिलेश्वरानंद के पहले ही उठ जाता, उनके वस्त्रों को सलीके से जमा देता, स्नान संध्या आदि की व्यवस्था कर देता, और प्रत्येक क्षण इस बात का ध्यान रखता, कि उन्हें किसी प्रकार का अभाव या कष्ट न हो।

एक शिष्य में चार गुण होने चाहिये — प्रथम तो वह गुरू की इच्छा, गुरू के मन की बात पलक झपकते ही समझ जाय, और उसे पूरा कर ले, दूसरा, उसके जीवन का एक ही प्रयत्न होना चाहिये, कि गुरू के मानसिक संताप उनके मानसिक तनाव दूर रखे जांय, जिससे कि वे ठोस रचनात्मक कार्य कर सकें, उनके तनावों को अपने ऊपर झेल ले, तीसरे गुरू के पूछने पर चतुर मन्त्री की तरह सही सलाह दे और गुरू आज्ञा दे उसे बिना नू-नच किये स्वीकार करे और पूरा कर ले, और चौथा गुरू सामने जल की तरह निर्मल और वृक्ष की तरह विनीत बना रहे, आलस्य, प्रमाद, बिलम्ब और शिथिलता पास न फटकने दे, और ये चारों ही गुण निर्भयानन्द में थे।

जब एक बार निखिलेश्वरानन्द तेज गर्मी से बीमार हो गये, और कुछ दिनों तक उन्हें केदारनाथ के आगे वासुकी झील के पास विश्राम करना पड़ा, तो उसने जिस प्रकार से उनकी सेवा की, वह अपने आप में अकथनीय है, उनकी उलटी को साफ करता, मल मूत्र की सफाई करता, दिन में कई बार उनके वस्त्र बदलता, सुपाच्य भोजन की व्यवस्था करता, और जंगल में हिंसक पशुओं से रक्षा के लिए बराबर जागता रहता, और सारे शरीर की मालिस करता हुआ, प्रत्येक क्षण सेवा में रत रहता और निर्भयानन्द की सेवा का ही यह परिणाम था, कि मृत्यु के मुख में गये हुए निखिलेश्वरानन्द को पुनः जीवन प्राप्त हो सका, स्वस्थ हो सके, और जल्दी से जल्दी विचरण करने के योग्य बन सके।

किसी भी प्रकार के तनाव को पहले अपने ऊपर झेल लेता, किसी प्रकार की बातचीत को वह पहले स्वयं स्वीकार कर लेता, और कुटिया के बाहर ही उसका समाधान कर देता। सन्यासियों के सम्मेलन की व्यवस्था करता, उन्हें निमंत्रण भेजता एकत्र करता और सबसे बड़ी बात कि उन पर कन्ट्रोल बनाये रखता, वास्तव में ही निर्भयानन्द सेवा की साकार प्रतिमा थे, शिष्य का जो स्वरूप होना चाहिए, वह निर्भयानन्द के माध्यम से जाना जा सकता है।

निखिलेश्वरानन्द के जीवन के सात वर्षों तक वह छाया की तरह साथ रहा, इन सात वर्षों में उसने एक मिनट के लिए भी निखिलेश्वरानन्द को अकेले नहीं छोड़ा इन सात वर्षों में उसने एक क्षण के लिए भी निखिलेश्वरानन्द की सेवा में न्यूनता नहीं आने दी, एक बार भी उनके सोने से पहले नहीं सोया, एक बार भी उनके उठने के बाद नहीं उठा, और उसमें कुछ ऐसा गुण आ गया था कि बिना कहे ही वह निखिलेश्वरानन्द के संकेत को समझ जाता, और वह कार्य तुरन्त कर डालता।

बाद में निखिलेश्वरानन्द ने उसकी सेवा से प्रसन्न हो कर उसे अपने हाथों से उच्चकोटि की साधनाएं दे कर सिद्धाश्रम पहुंचाया, परन्तु मैं इसका साक्षी हूँ कि जब वह गुरू की उंगली पकड़ कर सिद्धाश्रम में प्रवेश कर रहा था, तो उसकी दोनों आंखें आंसुओं से भीगी हुई थी, उसका कण्ठ अवरूद्ध था, और उसके होठों पर शब्द थे, **"गुरूदेव सिद्धाश्रम से कई गुना ज्यादा सुखदायक मेरे लिये तो आपका साहचर्य और आपकी सेवा है, जहां आप हैं, वहीं तो सिद्धाश्रम है।"**

नारायणो त्वं निखिलेश्वरो त्वं
मातः पिता गुरू आत्म त्वमेवं।
ब्रह्मा त्वं विष्णु रुद्र त्वमेवं
सिद्धाश्रमो त्वं गुरूवं प्रणम्यं ॥

गायत्री जयन्ती -- १७-८-८६

अखण्ड समाधि हेतु

ब्रह्मोपासना - सिद्धि

पूर्णता प्राप्ति के दो प्रकार हैं, जिनमें पहला प्रकार गायत्री साधना है, गायत्री साधना का तात्पर्य व्यक्ति अपने श्वास-प्रश्वास को नियंत्रित करे, रेचक, कुम्भक और पूरक के माध्यम से मंत्र को अपने हृदय में स्थापित करने का प्रयत्न करे ।

ऐसी साधना पत्रिका के साधकों और पाठकों ने की हैं, इससे पहले जोधपुर में " गायत्री साधना शिविर " भी लगाया जा चुका है, जिसके माध्यम से गायत्री उपासना और गायत्री मंत्र को हृदय में स्थापित करने की क्रिया का ज्ञान दिया जा चुका है ।

पूर्णता प्राप्ति का दूसरा चरण अखण्ड समाधि प्राप्त करना होता है, जीवन का यही मूल उद्देश्य है, और जीवन की यही पूर्णता है, जब तक व्यक्ति समाधि अवस्था में नहीं चला जाता, जब तक वह अपने श्वासों को नियंत्रित करने की कला नहीं जानता, तब तक जीवन में सफलता भी प्राप्त नहीं हो पाती ।

आज के संसार में सबसे बड़ी समस्या मानसिक तनाव है, और इस मानसिक तनाव के फलस्वरूप सैंकड़ों प्रकार की समस्याएं और बीमारियां बन गयी है, ब्लड प्रेसर, हार्टअटेक आदि जान लेवा बीमारियां तो केवल मानसिक तनाव की वजह से ही होती है, और इसके लिए किसी प्रकार की कोई औषधि संसार में विद्यमान नहीं है, चाहे हम यूनानी पद्धति से इलाज करवा लें, चाहे आयुर्वेदिक या एलोपैथिक ढंग से चिकित्सा करवा लें, मानसिक तनाव दूर करने का कोई साधन या उपाय नहीं है ।

और ऐसी स्थिति में चिकित्सकों और वैज्ञानिकों का ध्यान पुनः प्राचीन भारतीय दर्शन और भारतीय साधनाओं की ओर गया है, उन्होंने यह अनुभव किया है कि इसके माध्यम से जीवन में सफलता प्राप्त की जा सकती है, उन्हें गायत्री मंत्र की तेजस्विता और उसकी

चमत्कारिक स्थितियों का आभास हुआ और उन्हें यह लगा कि मन को एकाग्र करने, अपने विचारों को संयमित करने और अपने आप पर नियन्त्रण करने का सर्वोत्तम साधन गायत्री मंत्र ही है ।

गायत्री मंत्र

यों तो गायत्री मंत्र के मात्र चौबीस अक्षर है, परन्तु इसका प्रत्येक वर्ण अपने आप में पूर्ण विस्फोट संचार लिये हुए है, ये शब्द या अक्षर जब उच्चारण के द्वारा अन्दर गूंजते हैं, तो एक विशेष प्रकार का विस्फोट होने की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है, और यह विस्फोट अलग अलग रूपों में अलग अलग तरीकों से होता है, जिस प्रकार परमाणु बम के गिरने से उसके छोटे छोटे अणु बिखर कर विस्फोट करने लगते हैं, उसी प्रकार ये चौबीस अणु शरीर के और मन के अन्दर विस्फोट करने का कारण बनते हैं, और यह विस्फोट शरीर की जड़ता, आलस्य, अकर्मण्यता, दुर्भाग्य, चिन्ताए और तनावों को नष्ट करने में सहायक बनता है, इस मन्त्र जप से एक विचित्र प्रकार की तेजस्विता पूर्ण लहर उठती है, और वह सारे शरीर को चेतना युक्त बना देती है, इससे चेहरे पर एक विशेष प्रकार का ओज, और दर्प आ जाता है, उसके चेहरे से एक विशेष प्रभाव उत्पन्न होने लगता है, जो किसी को भी प्रभावित करने की क्षमता रखता है।

गायत्री मन्त्र के उपरांत अगली स्थिति समाधि अवस्था प्राप्त करना है, और यह जीवन का एक आवश्यक तत्व और चिन्ह है, योग्य गुरू के मार्ग-दर्शन में हो अपने जीवन के समस्त पापों को समाप्त करने के लिए जीवन की जड़ता, और दुर्भाग्य को दूर करने के लिए तथा मानसिक तनावों पर पूर्ण विजय प्राप्त करने के लिए ब्रह्मोपासना विधि सर्वाधिक प्रामाणिक और श्रेयस्कर है ।

साधक सबसे पहले तो किसी योग्य गुरू से दीक्षा प्राप्त कर ले और साथ ही साथ उपनयन संस्कार भी प्राप्त कर ले, जिससे कि वह गायत्री मंत्र जप करने का अधिकारी बन सके, इसके बाद साधक को चाहिए कि वह पूरक, रेचक का अभ्यास करता हुआ सवा लाख गायत्री मंत्र जप सम्पन्न कर ले, यों तो शास्त्रों में यह विधान है, कि पूर्ण सफलता तो चौबीस लाख मंत्र जप करने से होती है, उपनिषदों में उल्लेख आया है, कि किसी भी मंत्र के जितने वर्ण होते हैं, या किसी मंत्र के जितने अक्षर होते हैं, उतने लाख मंत्र जप करने से उस मंत्र में सिद्धि प्राप्त हो जाती है, गायत्री मंत्र में चौबीस अक्षर हैं, अतः चौबीस लाख मंत्र जप करने से गायत्री सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

ब्रह्मोपासना विधि

ऐसा करने के बाद इस गोपनीय और महत्वपूर्ण साधना की ओर अग्रसर होना चाहिए, पत्रिका में यह पहली बार दिया जा रहा है, जो कि गायत्री साधना के आगे का प्रकार है ।

सबसे पहले साधक पूर्ण विधि विधान के साथ गुरू का चित्र या गुरू की मूर्ति अपने पूजा स्थान में स्थापित करे और पूर्ण मनोयोग पूर्वक उसकी पूजा करे, पूजा करने के बाद शुद्ध भावना के साथ उसकी आरती करे, और फिर ब्रह्मोपासना प्रयोग प्रारम्भ करे ।

विविध उपनिषदों में ब्रह्मोपासना प्रयोग का इतना अधिक गुणगान किया है, कि यदि उन सबका उल्लेख किया जाय तो एक पूरे ग्रन्थ की रचना हो सकती है।

सबसे पहले साधक स्नान कर पीला रेशमी वस्त्र धारण करे, कंधे पर भी पीला रेशमी वस्त्र डाल कर पूर्व की ओर मुंह कर पीले आसन पर बैठ जाय ।

फिर सामने तांबे के पात्र में ॐ शब्द को लिख कर उस पर "ब्रह्म यंत्र" की स्थापना करे। उपनिषदों में कहा गया है, कि अपने घर की सारी सम्पत्ति

प्रदान करने के बाद भी यदि "ब्रह्म" यंत्र प्राप्त हो जाता है, तो वह महत्वपूर्ण है। वास्तव में ही ब्रह्म यंत्र की रचना और यंत्र निर्माण अत्यन्त जटिल और सूक्ष्म है, अतः बहुत ही कम इस प्रकार के यत्रों का निर्माण हो पाता है।

परन्तु जो साधक साधना क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहते है, जिन साधकों में लगन है, जो साधक अपने मानसिक तनावों को दूर कर अखण्ड समाधि प्राप्त करना चाहते है, उन्हें अपने शरीर पर इस प्रकार का उत्तम कोटि का ब्रह्म यंत्र अवश्य ही धारण करना चाहिए।

सामने पात्र में ब्रह्म यंत्र स्थापित कर उसकी संक्षिप्त पूजा करें, और फिर ऋष्यादि न्यास करें—

ऋष्यादि-न्यास

शिरसि—सदाशिवाय ऋषये नमः।

मुखे—अनुष्टुप् छन्दसे नमः।

हृदि—सर्वान्तियामि - निर्गुण परम - ब्रह्मणे देवतायै नमः।

धर्मार्थ काम मोक्षवाप्तये, विनियोगः।

इसके बाद यंत्र पर पुष्प समर्पित करते हुए, पूर्ण ब्रह्म का ध्यान निम्न प्रकार से करें—

ध्यान

हृदय कमल मध्ये निर्विशेषं निरीहम्
हरि हर विधि वेद्यं योगिभिर्ध्यान गम्यम्।
जनन-मरण भीति भ्रंशि सच्चित स्वरूपम्
सकल भुवन ध्यान बीज चैतन्यमीड्ये।।

अर्थात् जो समस्त प्रकार के वेदों से रहित है, जो योगियों के द्वारा ध्यान गम्य है जिसे सिद्ध करने पर जन्म और मृत्यु का भय नहीं रहता, ऐसे चैतन्य स्वरूप ब्रह्म को मैं हृदय कमल में ध्यान करता हूं।

इसके बाद शुद्ध स्फटिक माला से ब्रह्म मंत्र का जप करें, यह सात अक्षरों का अपने आपमें श्रेष्ठतम मंत्र है। जिसका जप करने पर अखण्ड समाधि की अवस्था प्राप्त होती है और जो इच्छा मृत्यु को प्राप्त करने में सफल हो पाता है।

ब्रह्म मंत्र

ॐ सच्चिदेकं ब्रह्म

यह मंत्र समस्त संसार के मंत्रों में सर्वश्रेष्ठ है, केवल इसी मंत्र के जप से निश्चय ही समाधि प्राप्त हो जाती हैं।

जो गृहस्थ हैं, वे यदि अन्य सभी दृष्टियों से भी पूर्णता चाहते हो तो इस मन्त्र से पहिले ऐं (सरस्वती विद्या) ह्रीं (माया विद्या) श्रीं (लक्ष्मी विद्या) को जोड़ कर मंत्र का उच्चारण किया जा सकता है, ऐसा करने पर साधक को विविध विद्याएं, विविध मायाएं और विविध प्रकार की सर्वोतोन्मुखी लक्ष्मी निरंतर प्राप्त होती रहती है, इस प्रकार से मंत्र बनता है—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सच्चिदेकं ब्रह्म

इसका सात लाख मंत्र जप करने से सिद्धि प्राप्त हो जाती है, इस दिन (गायत्री सिद्धि दिवस के दिन) साधक को चाहिए कि सात माला मंत्र जप कर ले। ऐसा करने पर साधक को समाधि अवस्था प्राप्त होती है, और उसे एक अनिवर्चनीय आनन्द की उपलब्धि होती है जिससे वह सभी रोगों से रहित हो कर पूर्णता, अखण्डता अनुभव करता हुआ, समस्त विद्याओं को जानने वाला, समस्त सिद्धियों में पारंगत और भूत भविष्य और वर्तमान को अपनी आंखों से प्रत्यक्ष देखने वाला सिद्ध बन जाता है।

इस दिन गायत्री जयन्ती दिवस के अवसर पर यदि कोई साधक मात्र सात माला मंत्र जप ही ब्रह्म यंत्र के सामने सम्पन्न कर धारण करता है तो उसे आश्चर्यजनक सिद्धियां अनुभव होने लगती है, और वह निरन्तर सफलता की ओर अग्रसर होने लगता है।

वास्तव में ही ऐसे अवसर को हाथ से गंवाना नहीं चाहिए जो उच्च कोटि के साधक है, जो अपनी चिंताओं और परेशानियों को समाप्त करना चाहते है, जो अपने घर में अखण्ड लक्ष्मी और विविध प्रकार की विद्याएं प्राप्त करना चाहते है, जो श्रेष्ठ भाषण देने की कला सिद्ध करना चाहते हैं, जो समाज में और देश में अपना सम्मान प्राप्त करना चाहते है, उनके लिए यह श्रेष्ठतम अवसर है, और इसका उपयोग उन्हें अवश्य ही करना चाहिए।

संकट मोचन हनुमानाष्टक

बाल समय रवि भक्षि लियो तब, तीनहुं लोक भयो अंधियारो ।
ताहि सों त्रास भयो जग को, यह सङ्कट काहु सो जात न टारो ।
देवन आनि करि बिनती तब, छांड़ि दियो रवि कष्ट निवारो ।
को नहिं जानत है जग में कपि सङ्कट-मोचन नाम तिहारो ॥१॥

बालि के त्रास कपीस बसै गिरि, चाहिये कौन उपाय विचारो ।
चौकि महा मुनि साप दियो तब, चाहिये कौन उपाय विचारो ।
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु, सो तुम दास के सोक निवारो ।
को नहिं जानत है जग में कपि सङ्कट-मोचन नाम तिहारो ।२॥

अंगद के संग लेन गये सिय, खोज कपीस यह बैन उचारो ।
जीवन ना बचिहौं हम सौं जु, बिना सुधि लाए इहां पगु धारो ।
हेरि थके तट सिंधु सबै तब लाय, सिया-सुधि प्रान उबारों ।
को नहिं जानत है जग में, कपि सङ्कट-मोचन नाम तिहारो ॥३

रावन त्रास दई सिय को सब, राक्षसि सों कहि सोक निवारो ।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु, जाय महा रजनीचर मारो ।
चाहत सीय असोक सों आगि सो, दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो ।
को नहिं जानत है जग मे, कपि सङ्कट मोचन नाम तिहारो ॥४॥

बान लग्यो उर लछिमन के तब, प्रान तजे सुत रावन मारो ।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत, तबै गिरि द्रोन सु बीर उपारो ।
आनि सजिवन हाथ दई तब, लछिमन के तुम प्रान उबारो ।
को नहिं जानत है जग में कपि सङ्कट मोचन नाम तिहारो ॥५॥

रावन युद्ध अजान कियो तब, नाग के फांस सबै सिर डारो ।
श्री रघुनाथ समेत सबै दल, मोह भयो यह सङ्कट भारो ।
आनि खगेस तबै हनुमान जु, बन्धन काटि सुत्रास निवारो ।
को नहिं जानत है जग में, कपि सङ्कट मोचन नाम तिहारो ॥६॥

बन्धु समेत जबै अहिरावन, लै रघुनाथ पताल सिधारो ।
देबिहिं पूजि भलि विधि सो बलि, देउं सबै मिलि मन्त्र बिचारो ।
जाय सहाय भयो तब हो, अहिरावन सैन्य समेत संहारो ।
को नहिं जानत है जग में, कपि संकट मोचन नाम तिहारो ॥७॥

काज किये बड़ देवन के तुम, वीर महा-प्रभु देखि बिचारो ।
कौन सो सङ्कट मोर गरीब को, जो तुमसे नहिं जात है टारो ।
बेगि हरो हनुमान महा-प्रभु, जो कछु सङ्कट होय हमारो ।
को नहिं जानत है जग में, कपि सङ्कट मोचन नाम तिहारो ॥८॥

ध्यान

स्मरेद् रवीन्द्वग्नि-विलोचना तां, सत्-पुस्तकां जाप्य-वटीं दधानाम् ।
सिंहासनां मध्यम-यन्त्र-संस्थां, श्रीतत्त्व-विद्यां पराम्बां भजामि ।।
य एनां सचिन्तयेन्मन्त्री, सर्व-कामार्थ सिद्धिदाम् ।
तस्य हस्ते सदैवास्ति, सर्व-सिद्धिर्न संशयः ।।
तादृशं खड्गमाप्नोति, येन हस्त-स्थितेत वै ।
अष्टादश-महाद्वीपे, सम्राट् भोक्ता भविष्यति ।।

सिद्धि प्रयोग

इसके बाद सामने पात्र में जो भुवनेश्वरी शक्ति खड्ग माला रखी हुई है, उसके सामने निम्न दुर्लभ बीज मंत्र का उच्चारण करते हुए, एक एक पुष्प समर्पित करें, इसी प्रकार निम्न बीज मंत्र का इसी रात्रि को १०८ पाठ करें, और प्रत्येक पाठ की समाप्ति पर एक पुष्प खड्ग माला को समर्पित करें, इस प्रकार १०८ बार पाठ कर १०८ पुष्प समर्पित करें ।

शास्त्रों में कहा गया है, कि भुवनेश्वरी शक्ति खड्ग माला पर १०८ गुलाब के पुष्प समर्पित करें, पर यदि किसी कारण वश गुलाब के पुष्प प्राप्य न हों तो अन्य किसी भी प्रकार के पुष्प का प्रयोग किया जा सकता है ।

भुवनेश्वरी शक्ति खड्ग माला बीज मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं भुवनेश्वरी-हृदय-देवि शिरोदेवि शिखा-देवि कमन-देवि नेत्र-देव्यस्त्र-देवि कराले विकराले उमे सरस्वति श्रीदुर्गे उषे लक्ष्मि श्रुति स्मृति धृति श्रद्धे मेधे रति कान्ति आर्ये श्रीभुवनेश्वरि दिव्यौघ गुरु-रूपिणि सिद्धौघ-गुरु-रूपिणि मानवौघगुरु-रूपिणि श्रीगुरु-रूपिणि परम-गुरु-रूपिणि परात्पर-गुरु-रूपिणी परमेष्ठि-गुरु-रूपिणि अमृत भैरव-सहित - श्रीभुवनेश्वरि हृदय-शक्ति शिरः-शक्ति शिखा-शक्ति कवच-शक्ति नेत्र-भवत्यस्त्र -हृल्लेखे गगने रक्ते करालिके महोच्छूष्मे सर्वानन्द-मय-चक्र-स्वामिनी !

गायत्री-सहित-ब्रह्म-मयि सावित्री-सहित-विष्णु -मयि सरस्वती-सहित-रुद्र-मयि लक्ष्मी-सहित-कुबेर -मयि रति सहित-काम-मयि पुष्टि-सहित-विघ्न-राज-मयि शङ्ख-निधि-सहित - वसुधा-मयि पद्म-निधि-सहित-वसुमति-मयि गायत्र्यादि-सह-श्रीभुवनेश्वरि ह्रां हृदय-देवि ह्रीं शिरो-देवि ह्लूँ कवच-देवि ह्रौं नेत्र-देवि ह्र अस्त्र-देवि सर्व सिद्धिप्रद-चक्र-स्वामिनि !

अनङ्ग - कुसुमे अनङ्ग-कुसुमातुरे अनङ्ग-मदने अनङ्ग मदनातुरे भुवन-पाले गगन वेगे शशि-रेखे अनङ्ग वेगे सर्व-रोग-हर चक्र-स्वामिनि !

कराले विकराले उमे सरस्वति श्रीदुर्गे उषे लक्ष्मि श्रुति स्मृति धृति श्रद्धे मेधे रति कान्ति आर्ये सर्व संक्षोभण-चक्र-स्वामिनी !

ब्राह्मि माहेश्वरि कौमारि वैष्णवि वाराही इन्द्राणि चामुण्डे महा-लक्ष्म्यनङ्ग-रूपेऽनङ्ग-कुसुमे मदनातुरे भुवन-वेगे भुवन पालिके सर्व-शिशि-रेऽनङ्ग मदनेऽनङ्ग मेखले सर्वाशा-परिपूरक-चक्र-स्वामिनि !

इन्द्र मय्यग्नि-मयि यम-मयि वरूण-मयि वायु-मयि सोम-मयि-शान-मयि ब्रह्म-मयि दण्ड-मयि खड्ग-मयि पाश-मय्यंकुश-मयि गदा-मयि त्रिशूल-मयि पद्म-मयि चक्र-मयि वर-मय्यंकुश-मयि पाश मय्यभय-मयि बटुक-मयि यांगिनि-मयि क्षेत्रपाल -मयि-गण-पति मय्यष्ट-वसु-मयि द्वादशादित्य-मय्ये -कादशरुद्र-मयि सर्व-भूत-मय्यमृतेश्वर-सहित-भुवनेश्वरि त्र्यैलोक्य-मोहन -चक्र-स्वामिनि नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ ।।

जब १०८ बार पाठ हो जाय तब पूर्ण श्रद्धा के साथ उस माला को अपने गले में धारण कर ले धारण करते ही पूरे कमरे में एक अनिवर्चनीय प्रकाश सा अनुभव होगा, और ऐसा लगेगा कि जैसे शरीर स्थित सभी चक्र जागृत हो गये हों साथ ही साथ साधक को सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के विविध दृश्य अनुभव होने लगेंगे, जीवन में साधक को यह शक्ति माला धारण किये रहना चाहिए, इसे धारण करने पर व्यक्ति की कीर्ति चारों ओर फैलती है, और उसे समस्त कार्यों में निश्चय ही सिद्धि प्राप्त होती है, ऐसे साधक के घर में धन की तो निरन्तर वर्षा सी होती रहती है ।

क्या आप पत्रिका के सदस्य है ?

तो फिर गुरू पूर्णिमा के अवसर पर

विशेष छूट का लाभ क्यों नहीं उठाते

साहित्य तो जन्म जन्म का साथी होता है, आपके लिये भी और आपकी आने वाली पीढ़ियों के लिये भी। यह ऐसा साहित्य है जो हाट-बाजार में नहीं मिल सकता, यह ऐसा साहित्य है जो समाप्त होने पर पुनः प्राप्य संभव नहीं; और यह ऐसा साहित्य हैं, जिसमें साधनाओं का दुर्लभ खजाना भरा पड़ा है ....और फिर "पत्रिका" ने गुरू पूर्णिमा के अवसर पर विशेष छूट भी तो दी है फिर आप ही ऐसे साहित्य से क्यों वंचित रहे।

ग्रन्थ का नाम	वास्तविक मूल्य	रियायती मूल्य
※ लक्ष्मी प्राप्ति के सफल प्रयोग.......	३०)	१५)
※ भौतिक बाधाओं पर विजय प्रयोग.......	३०)	१५)
※ दस लघु पुस्तिकाएं-तीन-सेट— प्रतिसेट	२०)	५)
※ सन् ८८ का मंत्र तंत्र यंत्र पत्रिका सेट.......	९६)	४०)
※ पुरानी विभिन्न दस पत्रिकाओं का सेट...	७०)	१०)
※ हिमालय का योगी	३०)	१५)
※ शाबर अंक	२०)	१५)
※ सन् ८७, व ८५ का पूरे वर्ष का पत्रिका सेट— प्रति सेट	९६)	४०)
※ हिमालय के योगियों की गुप्त सिद्धियां	१५)	१०)
※ हस्तरेखा शास्त्र	३०)	२०)
※ सिद्धाश्रम साधनाएं	३०)	१०)

नोट:— आप रियायती मूल्य बैंक ड्राफ्ट या मनिआर्डर से भेज दें, हम सुरक्षित रूप से संबंधित ग्रन्थ भेज देंगे। धनराशि के साथ जो ग्रन्थ चाहिये उसका पूरा विवरण लिख भेजे।

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कोलोनी
जोधपुर - ३४२००१ (राज.)